अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
म्हारो लक्ष्य - राष्ट्र री प्रगति
स्थापित 1935

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• सितम्बर २०२० • वर्ष ७१ • अंक ०९
मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००

जन्म :
११ सितम्बर
१९१९ ई.

निधन :
११ नवम्बर
२००८ ई.

महामनीषी, स्वतंत्रता सेनानी, प्रखर चिंतक, प्रबुद्ध दार्शनिक, राजस्थानी एवं हिन्दी भाषाओं के विश्वप्रसिद्ध महाकवि सेठियाजी की जयंती पर सादर समर्पित

पद्मश्री कन्हैयालाल सेठिया

परिशिष्टांक

२७ सितम्बर २०२० को आयोजित बिहार सम्मेलन की प्रादेशिक सभा में माल्यार्पण कर निर्वाचित अध्यक्ष श्री महेश जालान को पदभार देते अध्यक्ष श्री बिनोद तोदी।

१७ सितम्बर २०२० को एल्गिन रोड, कोलकाता स्थित सुप्रसिद्ध गोलमंदिर के सामने 'मारवाड़ी सम्मेलन भोजनालय' कार्यक्रम के शुभारम्भ के अवसर पर सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ, लायन्स की डिस्ट्रिक्ट गवर्नर श्रीमती लेखा शर्मा, पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर श्री कैलाश खण्डेलवाल, सम्मेलन के पदाधिकारीगण सर्वश्री नंदकिशोर अग्रवाल, संजय हरलालका, दामोदर विदावतका एवं सम्मेलन तथा लायन्स क्लब इंटरनेशनल के सदस्यगण।

To your taste buds,
with love...
Refreshingly, yours.
Indulgently, yours.
Addictively, yours.
Spicily, yours.
Healthily, yours.
Nourishingly, yours.
Delightfully, yours.
Obsessively, yours.
Temptingly, yours.
Passionately, yours.
Snackingly, yours.
Yours Tastefully
Anmol™
celebrating
25
years
BISCUITS
www.anmolindustries.com | Follow us on:

समाज विकास

◆ सितम्बर २०२० ◆ वर्ष ७१ ◆ अंक ०९

◆ एक प्रति - ₹१० ◆ वार्षिक - ₹१००

अनुक्रमणिका

शीर्षक	पृष्ठ संख्या
● **सम्पादकीय : शिव कुमार लोहिया** राष्ट्र के माथे की बिंदी है हिन्दी	५
● **अध्यक्षीय : सन्तोष सराफ** सावधानी ही सुरक्षा है!	७
● **आलेख : गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** अनवरत आगे बढ़ते रहें कदम!	८
● **रपट – कोरोना राहत सेवाकार्य**	
मारवाड़ी सम्मेलन भोजनालय का शुभारम्भ	९
निःशुल्क मास्क वितरण	१०
● **बिहार सम्मेलन की प्रादेशिक सभा**	१३
● **पद्मश्री कन्हैयालाल सेठिया परिशिष्टांक**	१६-२२
● देव-स्तुति	२५
● सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत	२७-३०

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
All India Marwari Federation

प्रशासनिक एवं सम्पर्क कार्यालय : **४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता - ७०००१७**
फोन : ०३३-४००४ ४०८९

पंजीकृत कार्यालय : १५२बी (द्वितीय तल), महात्मा गांधी रोड कोलकाता - ७००००७

◆ email: aimf1935@gmail.com

◆ Website : www.marwarisammelan.com

स्वत्वाधिकारी ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन के लिये **श्री भानीराम सुरेका** द्वारा ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन, ४बी, डकबैक हाउस (४ तल्ला), कोलकाता-१७ से प्रकाशित तथा सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित।

◆ प्रेरक संपादक : सीताराम शर्मा ◆ सम्पादक : शिव कुमार लोहिया

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

हठात् समाज विकास का फरवरी २०१९ अंक हाथ आया। कार्यक्रमों व आवश्यक सूचनाओं को समाहित करते हुये पत्रिका आकर्षक व पठनीय सामग्री से परिपूर्ण लगी। विशेषकर सम्पादकीय 'योगस्थ कुरु कर्माणि...' मन को छू गया। मानव प्रजाति द्वारा प्रकृति तथा पर्यावरण की निष्ठुरतापूर्ण उपेक्षा पर प्रखर टिप्पणी हृदयस्पर्शी है।

परिवार व समाज की उपयोगिता तथा मनुष्य का योग, धर्म, आध्यात्म व शास्त्रों के साथ मानव कल्याण मूलक सम्बन्ध का सूक्ष्म विश्लेषण लेख को बार-बार पढ़ने के बाद भी मन को गहन चिंतन की ओर उन्मुख करता है। सम्पादक श्री शिव कुमार जी लोहिया को इस उपयोगी व पठनीय सम्पादकीय के लिये हार्दिक बधाई!

– जुगल किशोर अग्रवाल
पूर्व अध्यक्ष, नगाँव शाखा

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
4बी, डकबैक हाउस (चौथा तल्ला)
41, शेक्सपियर सारणी, कोलकाता-700 017

समाज से सादर निवेदन

वैवाहिक अवसर पर मद्यपान करना - कराना धार्मिक एवं सामाजिक दोनों रूप से उचित नहीं है।

प्री-वेडिंग शूट हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के खिलाफ है।

समाजहित में इनसे परहेज करें।

निमंत्रण में ई-कार्ड को बढ़ावा दें।

MARWARI SAMMELAN FOUNDATION

(A Trust of All India Marwari Federation)

उच्च शिक्षा कोष

समाज के बच्चों को शिक्षित कर परिवार को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में पहल

विगत ८ वर्षों में देश के विभिन्न भागों के सैंकड़ों छात्र-छात्राओं को करीब दो करोड़ रुपयों का दिया जा चुका है अनुदान

वित्तीय वर्ष (२०१८-१९) में ५२ लाख रुपयों से अधिक का आवंटन

"Education is a fundamental human right and essential for excercise of all other human rights."

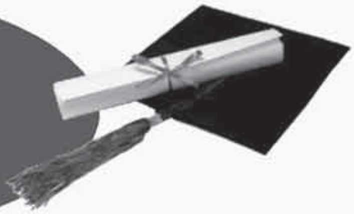

उदारहृदय समाजबंधुओं का मिल रहा है तहेदिल से साथ

आप भी बढ़ाएँ सहयोग का हाथ
समाज के सर्वांगीण विकास में बनें भागीदार !

छात्र/छात्राएँ निःशुल्क छात्रवृत्ति के लिये सम्पर्क करें

इंजीनियरिंग, टेक्निकल, चिकित्सा, मैनेजमेंट आदि क्षेत्रों में स्नातकोत्तर/उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति हेतु समाज के मेधावी एवं जरूरतमंद छात्र-छात्राओं से आवेदन आमंत्रित हैं।

पात्रता : (क) १७ और २५ वर्षों के बीच के उम्र के मेधावी छात्र-छात्राएँ जिनका शैक्षिक परीक्षाओं में प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा हो और जिन्हें केवल अपनी योग्यता के बल पर किसी मान्यताप्राप्त शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल रहा हो।

(ख) जिन आवेदकों के माता-पिता की वार्षिक आय तीन लाख रुपयों से कम होगी, उन्हें प्राथमिकता दी जाएगी।

प्रक्रिया : (क) पूर्व शैक्षिक प्रमाणपत्रों, प्रवेश के प्रमाण, माता-पिता के आय प्रमाणपत्र एवं पासपोर्ट साइज चित्रों के साथ, मारवाड़ी सम्मेलन की किसी शाखा/सम्बद्ध संस्था से अनुमोदित आवेदन प्रस्तुत करने हैं।

(ख) एक छात्र-छात्रा को वर्ष में अधिकतम दो लाख रुपयों की राशि अनुदानस्वरूप दी जा सकती है।

(ग) प्रतिवर्ष कुछ छात्रवृत्तियाँ छात्राओं के लिए सुरक्षित हैं।

आवेदन करें : ***चेयरमैन, उच्च शिक्षा उपसमिति, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन***
४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-१७, फोन : (०३३) ४००४४०८९, ईमेल : aimf1935@gmail.com

राष्ट्र के माथे की बिंदी है हिन्दी

हिन्दी हमारी मातृभाषा है – मातृस्वरूपा। कहा जाता है कि भगवान सब जगह नहीं हो सकते, इसलिये उन्होंने माँ बना दिया। मातृभाषा अर्थात जो माँ के गर्भ में रहते हुए सुना जाता है। हमें गर्व होना चाहिये कि हिन्दी हमारी मातृभाषा है। कबीर ने कहा है – भाषा बहता नीर। वह भाषा जिसका वल्लभाचार्य, विट्ठल, रामानुज, नामदेव, संत ज्ञानेश्वर, नरसी मेहता, मीराबाई, गुरु नानक, शंकर देव, चैतन्य महाप्रभु जैसे संतो ने अपनी अमरवाणी को प्रकट करने के लिये प्रयोग किया। इन्होंने हिन्दी भाषा के बहाव को गहराई, आकर्षण, स्थायित्व, अलंकरण प्रदान किया। संतान कितनी भी काबिल हो जाय, अपनी माँ का विश्लेषण करने योग्य नहीं हो सकता। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने ठीक ही कहा है –

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
विन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय के सूल।

अपनी भाषा हृदय की भाषा होती है। हृदय की भावना को हम अपनी मातृभाषा में ही प्रकट कर सकते हैं। मैथिलीशरण गुप्त ने कहा है –

जिसको न निज देश और निज भाषा का अभिमान है,
वह नर नहीं नरपशु निरा और मृतक समान है।

हिन्दी भाषा के पक्ष में, उसकी गुणवत्ता के विषय में बहुत सी बातें हम जानते हैं। हिन्दी संसार की उन्नत भाषाओं में सबसे अधिक वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित भाषा है – सहज, सरल एवं लचीली। एक अनुमान के अनुसार लगभग २.५ लाख शब्दों का भंडार, एक भाव, कार्य एवं वस्तु व्यक्त करने के लिये अनेकानेक शब्द। स्वर एवं व्यंजनों को अलग-अलग व्यवस्थित किया गया। सभी वर्गों को उनके उच्चारण, स्थानादि विशेषताओं के आधार पर रखा गया। हिन्दी की लिपि देवनागरी सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है। प्रत्येक ध्वनि के लिये निश्चित लिपिचिन्ह का प्रयोग होता है। एक लिपिचिन्ह एक ही ध्वनि का प्रतिनिधित्व करता है। 'अ' से अनपढ़ से शुरू होती है एवं 'ज्ञ' से ज्ञानी बनाकर छोड़ती है। हिन्दी भाषा को संस्कृत की बड़ी बेटी कहा जाता है। यह लगभग ६० करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती है। चीनी एवं अंग्रेजी के बाद विश्व में तीसरे नम्बर पर आती है। भारत के अलावा सूरीनाम, ट्रिनीडाड, गुयाना, उगांडा, मॉरीशस एवं अन्य देशों में भी बोली जाती है। ऑक्सफार्ड डिक्शनेरी में १०,००० शब्द हिन्दी के शामिल किये गये हैं। गूगल सर्वेक्षण बताता है कि इंटरनेट पर डिजिटल दुनिया में हिन्दी सबसे बड़ी भाषा बनकर उभर रही है। भारत का ९३% युवा यूट्यूब पर हिन्दी के वीडियो देखता है। २०११ की जनगणना के अनुसार देश के ४३.६३ प्रतिशत लोग हिन्दी बोलते हैं। अंग्रेजी सिर्फ २ लाख ७० हजार लोग बोलते हैं। सोशल मीडिया जैसे फेसवुक, ट्विटर आदि पर हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है। हिन्दी की वर्णमाला विज्ञान से भरी हुई है, जो आज के छात्रों को जानना जरूरी है। वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर तार्किक हैं। अन्य भाषाओं में इस प्रकार का वैज्ञानिक दृष्टिकोण दिखाई नहीं देता। जैसे क ख ग घ ङ - 'कंठव्य' हैं क्योंकि इनका उच्चारण करते समय कंठ से स्वर निकलता है। च छ ज झ ञ - को 'तालव्य' कहा जाता है क्योंकि इनका उच्चारण करते समय जीभ तालू का स्पर्श करेगी। ट ठ ड ढ़ ण - को 'मूर्धन्य' कहा जाता है क्योंकि इनका उच्चारण करते समय जीभ दाँतो को छूती है। प फ ब भ म - को 'ओष्ठव्य' कहते है क्योंकि इनका उच्चारण करते समय दोनों होंठ मिलते हैं। हमें अपने भारतीय भाषा पर गर्व होना चाहिए। आज विश्व के १७५ से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पठन-पाठन हो रहा है। अमेरिका के ४५ से अधिक शिक्षण संस्थानों में हिन्दी पढ़ाई जाती है।

स्वतंत्रता से पहले हिन्दी हमारे जन आंदोलन की भाषा रही है। देश के सभी हिन्दीभाषी और गैर हिन्दीभाषी आला नेताओं ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करने को समर्थन दिया है। इन नेताओं में महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, सरदार पटेल, भगत सिंह आदि शामिल हैं। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कहा था कि "**भारतीय भाषाएँ नदियाँ हैं और हिन्दी महानदी।**" महात्मा गांधी ने कहा था, "**राष्ट्रभाषा के बिना देश गूँगा है।**" हिन्दी आम भाषा के रूप में देश को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य करती है। हिन्दी हमारे मूल्यों, संस्कृति, संस्कारों की संवाहक और पहचान है। हमारे स्वाभिमान, हमारी अस्मिता का द्योतक है। मातृभाषा आत्मा की वह संवेदना है जिसमें विचार प्रवाहित होते हैं। कबीर दास ने यह भी कहा था – भाषा सतगुरु सहित है, सत मत गहिर गंभीर। मातृभाषा मानव के सत का प्रतिनिधित्व करती है। मातृभाषा गुरु है। क्या अन्य कोई भाषा यह स्थान ले सकती है? कदापि नहीं। जगत में अगर माँ का कोई स्थान ले सके तो मातृभाषा का स्थान भी अन्य कोई भाषा ले सके।

दुःख की बात है कि जमीनी हकीकत की ओर नजर डालतें हैं तो मन संशय से भर जाता है। १८३५ में लार्ड थामस विंगटन मैकाले ने 'मिनट आफ १८३५' को लागू करके भारतीय भाषा की जगह अंग्रेजी भाषा के प्रयोग का मार्ग प्रशस्त किया था। स्वतंत्रता के बाद अंग्रेज तो चले गये लेकिन हमने उनकी अंग्रेजीयत अपना ली। मानसिक दृष्टि से हम पाश्चात्य भाषा एवं संस्कृति के गुलाम ही रह गये। फ्रांस, जापान, रूस, चीन, जर्मनी जैसे विकसित देश अपनी भाषा को अपनाकर प्रगति करते गये। हम भाषा के नाम पर

आपस के मतभेद को नहीं सुलझा सके। अपने ही देश में हिन्दी गरीबों एवं असहायों की भाषा कही जाने लगी। लोगों का कहना है कि अगर हिन्दी में पढ़ेंगे तो 'स्मार्ट' कैसे बनेंगे। कैरियर की होड़ में हमारे बच्चे फिसड्डी रहेंगे। न आई.ए.एस. बन पायेंगे, न आई.आई.टी. जा पायेंगे और न आई.आई. एम. की सीढ़ी चढ़ पायेंगे। चाहे गलत बोलो, अंग्रेजी बोलने वाले की अलग शान है। मोची, पनवाड़ी, धोबी आदि सब अपनी दूकान पर अंग्रेजी में बोर्ड लगवाते है, चाहे वे स्वयं ही न पढ़ पायें। मिठाई की दूकान की जगह 'स्वीट शॉप' की अलग शान होती है। नाई की दूकान की जगह 'जेन्ट्स पार्लर' की अलग पहचान होती है। अंग्रेजी जानने वालों को अधिक वेतन मिलता है।

अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई करवाने वाले गैर सरकारी विद्यालय तेजी से खुल रहे हैं। इसका एक प्रमुख कारण है कि हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में शिक्षा का स्तर तेजी से गिर रहा है। अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने वाले युवाओं को हिन्दी से कोई लगाव नहीं है। घर में पूछते हैं कि सिक्सटी नाइन को हिन्दी में क्या बोलते हैं। युवाओं का हिन्दी लेखन देखकर रोना आता है। इस तरह चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हिन्दी अपने देश में ही विदेशी भाषा बनकर रह जायेगी। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री एवं हिन्दी के परम विद्वान अटल बिहारी वाजपेयी की कविता याद आ रही है –

बनने चली विश्व भाषा, जो अपने घर में दासी
सिंहासन पर अंग्रेजी है, लखकर दुनिया हांसी,
लखकर दुनिया हांसी, हिन्दीदां बनते चपरासी,
अफसर सारे अंगरेजीमय, अवधी हों, मद्रासी,
कह कैदी कविराय, विश्व की चिंता छोड़ो
पहले घर में अंगरेजी के गढ़ को तोड़ो।

भाषा के साथ, भावना बदल रही है। माता-पिता की जगह मॉम-डैड से, हाय-हैलो से ही काम चल जाता है। सतता का अंग्रेजी में कोई स्थान नहीं है। सत्संग के विषय से वे अनभिज्ञ हैं। सात्विक, राजसी एवं तामसी भोजन के विषय में जानने को उनकी कोई रुचि नहीं है। होली-दिवाली की जगह क्रिसमस जैसे त्यौहार ले रहे हैं। शुभ जन्मदिन हैपी बर्थडे में बदल गये हैं। भारतीय व्यंजनों की जगह केक, पुडिंग, प्रेस्ट्री आदि ले रहे हैं।

इस स्थिति को कैसे संभाला जाय, इसके बारे में गहन सोच की आवश्यकता है। हिन्दी एक जीवंत भाषा है। जीवंत भाषा अन्य भाषा के शब्दों को आत्मसात कर लेती है। हिन्दी के शब्द भंडार में साढ़े तीन हजार फारसी के, ढाई हजार अरबी के शब्द आ गये हैं। हमारी भाषा का मुकाबला कोई भी अन्य भाषा नहीं कर सकती। अंग्रेजी में जितने शब्द हैं, उनसे कई गुना अधिक शब्द हिन्दी में है। आवश्यकता है कि हिन्दी अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों को अपनाकर अपना सर्वभारतीय स्वरूप अपनाए। अंग्रेजी के कुछ ऐसे शब्द हैं जो हमारे दैनिक व्यवहार में आते हैं जैसे – सिगरेट, बटन, क्रिकेट, कम्प्यूटर, टाई, बल्ब, साइकिल, टैक्सी, बस, टीवी, रेडियो, रिमोट, सीमेंट, पेट्रोल, डीजल, डॉक्टर, नर्स, एम्बुलेंस आदि। इस तरह के शब्दों को अपनाना ही उपयुक्त होगा।

हमारी भाषा को अन्य किसी भाषा से कोई खतरा नहीं है। न ही अन्य भाषा से हमारा कोई वैमनस्य है। हमारी भाषा को खतरा हमारी अपनी मानसिकता से है। आज स्थिति यह है कि अंग्रेजी जानने वालों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। नई पीढ़ी आज हिन्दी को हेय की दृष्टि से देख रही है। अंग्रेजी को प्राथमिकता मिल रहा है। हमें हिन्दी भाषा के सौंदर्य, गहराई, ललित गुणों का अध्ययन करके अपने जीवन में आत्मसात करने का प्रयास करना चाहिए। तभी हमारी अभिव्यक्ति में सौंदर्य का समावेश होगा, जो अंग्रेजी भाषा को अपनाकर हम नहीं प्राप्त कर सकते हैं। बोलचाल की हिन्दी में अनावश्यक रूप से अंग्रेजी समावेश करके पूरी भाषा के स्वरूप को नष्ट करने के प्रयास को सफल नहीं होने देना चाहिए। इसी का फायदा उठाते हुए व्यापारिक कंपनियाँ भी अपने विज्ञापन में हिन्दी के स्वरूप के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। उदाहरणस्वरूप ये दिल माँगे मोर, पल बनाए मैजिकल, क्या आप क्लोज अप करते हैं, कम ऑन गर्ल्स वक्त है शाईन करने का, लाइफ हो तो ऐसी, व्हाट योर बहाना इज?, टेस्ट भी हेल्थ भी, यही है राइट च्वायस बेबी, शॉक लग गया, थंडा-थंडा कूल-कूल, नो चिंता ऑनली मनी, इसको लगा डाला तो लाइफ झिंगालाला, रोटोमेक लिखते-लिखते लव हो जाय आदि। हिन्दी के साथ इस खिलवाड़ को रोकने की आवश्यकता है। हिन्दी का स्वरूप दिनोंदिन बिगाड़ा जा रहा है। शुद्ध हिन्दी, साहित्यिक हिंदी की अवहेलना हो रही है। इसी के साथ हमारी संस्कृति पर भी कुठाराघात हो रहा है। जाहिर है जब हम प्रणाम या नमस्ते कहते हैं तो उसके पीछे श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहता है जो हाय या हैलो के संबोधन में नहीं हो सकता। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में हिन्दी फिल्मों का भी बहुत बड़ा योगदान है। कुछ ऐसे ऐसे बार्तालाप के उदाहरण है जो किंवदंती बन गये। जैसे जो डर गया, सो मर गया। शोले फिल्म का वह टुकड़ा जिसमें डाकू का सरदार पूछता है – अरे ओ साम्बा, कितने आदमी थे? यह सिर्फ हिन्दुस्तान में नहीं बल्कि विदेशों में भी हिन्दीभाषियों के जेहन में सदैव सुरक्षित रहेगा।

यह याद रखना चाहिए कि अगर एक भाषा मरती है तो उसके साथ हजारों वर्ष का अनुभव, उसकी संस्कृति एवं पहचान सदा-सदा के लिए लुप्त हो जाती है।

हिन्दी को प्रदूषित करने के प्रयास को विफल करके उसके विशुद्ध स्वरूप को उभारने की आवश्यकता है जिसके सौंदर्य, संस्कृति एवं साहित्य के बहाव में युवा डुबकी लगा कर स्वयं को तरोताजा महसूस कर सकें। भाषा के माध्यम से उनके जीवन में हमारी संस्कृति के सौंदर्य का समावेश हो सके, यह हमारा प्रयास होना चाहिए। इति –

हिन्दी के सुरक्षित गंधो से, भू अम्बर आज महकने दो,
हिन्दी को सारे भारत में सँजने और सँवरने दो,
है यह हमारी मीठी जुबान, नित वढ़ने दो उभरने दो।

शिवकुमार लोहिया

शिव कुमार लोहिया

सावधानी ही सुरक्षा है!

– सन्तोष सराफ

कोरोना महामारी के कारण पिछले ६ महीने से हमारे देश में पूर्ण रूप से जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। मानव का अहं चूर-चूर हो गया है। इस महामारी ने स्पष्ट रूप से यह स्थापित किया है कि हमें सदैव अप्रत्याशित के लिये तैयार रहना चाहिए। महामारी के प्रारम्भिक काल में इस बीमारी के विषय में जानकारी बहुत ही कम थी। फलस्वरूप भय का माहौल था, शनैः शनैः चिकित्सकों को इस बीमारी के इलाज के लिये आवश्यक जानकारी मिलती गई। कुछ औषधियों का भी प्रयोग किया गया। लाखों लोगों की चिकित्सा के बाद कुछ मापदंड स्थापित होते गये। इससे इस बीमारी की चिकित्सा करना सहज हो गया। इस महामारी का सर्वाधिक खतरनाक पहलू है इसकी संक्रमणधर्मिता। इसलिये बीमारी की चिकित्सा से अधिक बीमारी के संक्रमण से स्वयं को बचाकर रखना ही प्राथमिक है।

इस दौरान साधारण जन कोविड के अलावा अनेक प्रकार की समस्याओं से गुजर रहे हैं। लाखों-करोड़ों लोगों के आयस्रोत संकुचित हो गये हैं या एकदम से बंद हो गये हैं। ऐसी हालत में वे लोग असहायता की अवस्था से गुजर रहे हैं। साथ-साथ घरों में बुजुर्गों पर विशेष भयानक दवाब पड़ रहा है। पिछले कुछ महीनों से मैंने अन्नपूर्णा रसोई की चर्चा की थी। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के केन्द्रीय पदाधिकारियों एवं भूतपूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण के सहयोग से इस मास 'अन्नपूर्णा की रसोई' कार्यक्रम लायंस इंटरनेशनल के साथ मिलकर प्रारम्भ किया गया है। अभी जून २०२१ तक के लिए अनुबंध किया गया है और इसके बाद के लिए परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लिया जाएगा। १७ सितम्बर २०२० को इस कार्यक्रम का उद्‌घाटन कोलकाता के एल्गिन रोड स्थित सुप्रसिद्ध गोलमंदिर में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम के तहत रोजाना ३०० लोगों को निःशुल्क भोजन उपलब्ध करवाया जा रहा है। लायंस इंटरनेशनल शहर के विभिन्न इलाकों में जाकर जरूरतमंद लोगों को अपनी सेवायें प्रदान कर रहा है। मुझे स्वामी विवेकानंद के वचन का स्मरण हो रहा है। उन्होंने कहा था कि देश के दरिद्र लोगों को भगवान की बात बताना मूर्खता है। इनके लिये भोजन की व्यवस्था की आवश्यकता है। उसी प्रकार इस महामारी में समाज सुधार से कहीं ज्यादा आवश्यक है समाज के असहाय लोगों की सहायता करना। इस कार्यक्रम के साथ-साथ प्रांतीय एवं स्थानीय शाखाओं के माध्यम से पूरे देश में निःशुल्क मास्क वितरण सम्पन्न किया गया है। जरूरतमंद लोगों को और क्या-क्या सेवाएँ सम्मेलन दे सकता है, इस विषय पर आगे भी विचार हो रहा है। भूतपूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा की अध्यक्षता में उपसमिति का गठन किया गया है, जो राहतकार्य कार्यक्रम का संचालन कर रही है।

महामारी के बावजूद संगठनात्मक गतिविधियाँ नियमित रूप से चल रही हैं। इसी माह बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन ने जूम के द्वारा वार्षिक सभा सम्पन्न किया। इस सभा में नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री महेश जालान ने पदभार ग्रहण किया। मैं श्री जालान को हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ। श्री जालान एक समर्पित एवं कर्मठ कार्यकर्ता हैं। सम्मेलन में अनेक वर्षों का अनुभव उनके साथ है। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि उनके कार्यकाल में बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन सफलता की नई ऊँचाईयाँ छूएगा।

मुझे यह बात सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का अधिवेशन भी शीघ्र ही आहूत करने का प्रयास चल रहा है। परिस्थिति में सुधार की आशा में समय बीतता जा रहा है। कम से कम इस वर्ष के अंत तक किसी विशेष सुधार भी अपेक्षा नहीं की जा रही है। इसी परिस्थिति में आवश्यक सावधानियाँ अपनाते हुए अधिवेशन आयोजित करने के अलावा और कोई विकल्प नजर नहीं आ रहा है। शीघ्र ही इस संबंध में आवश्यक घोषणा की जायगी।

आने वाले महीनों में नवरात्रि, दुर्गापूजा का त्यौहार आ रहा है। सभी समाजबंधुओं को त्यौहारों की हार्दिक शुभकामनाएँ। माँ दुर्गा सब की मनोकामना पूरी करेंगी, इसी आशा एवं विश्वास के साथ।

जय समाज, जय राष्ट्र!

अनवरत आगे बढ़ते रहें कदम!

– गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया
निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष

१९३५ में स्थापना के बाद से ही अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मूल उद्देश्य रहा है – समाज सुधार, सामाजिक कुरीतियों व आडम्बरों का निवारण एवं राष्ट्र की एकता तथा प्रगति। अपने इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सम्मेलन पिछले आठ दशकों से भी अधिक समय से अपने विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से अनवरत प्रयासरत है। हमारे पूज्य अग्रजों ने अपने दूरदर्शी नेतृत्व के जरिये समाज में व्याप्त कुप्रथाओं के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की। इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप सम्मेलन ने पर्दा-प्रथा, बाल-विवाह जैसी कुरीतियों पर नियंत्रण में तथा विधवा-विवाह, नारीशिक्षा आदि के समर्थन में उल्लेखनीय सफलता पाई।

किसी भी सामाजिक कार्यक्रम की सफलता के लिए सामाजिक संगठन अनिवार्य है। हम सभी साथ आकर, समाज के सभी तबकों को एकजुट करके ही अपनी सामाजिक समस्याओं का सामना कर सकते हैं। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन राष्ट्रीय स्तर पर समग्र मारवाड़ी समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए समाज के सर्वांगीण विकास हेतु प्रयत्नशील है। सम्मेलन आज अपनी १७ प्रादेशिक शाखाओं के साथ देश के २३ राज्यों में सक्रिय रूप से कार्यरत है।

समाज के चौमुखी विकास हेतु सम्मेलन ने समाज को एक वैचारिक मंच प्रदान किया है और विभिन्न सामाजिक कुरीतियों के निवारण में राष्ट्रीय स्तर पर अपनी भूमिका का निर्वाह किया है। तथापि सामाजिक परिवर्तन एक निरंतर प्रक्रिया है और इसके लिए निरंतर प्रयास की आवश्यकता होती है। **ये सत्य है कि ऐसा कोई समाज नहीं, जिसकी कोई समस्या न हो, लेकिन साथ ही ये भी सत्य है कि ऐसी कोई समस्या नहीं जिसका कोई समाधान न हो।** समयांतर में समस्याएँ बदली हैं। आज हमारे समक्ष वैवाहिक कार्यक्रमों में मद्यपान, प्री-वेडिंग शूटिंग, फिजूलखर्ची, तलाक की बढ़ती प्रवृति, संस्कार-संस्कृति के प्रति उदासीनता आदि समस्याएँ हैं। सम्मेलन अपने विभिन्न कार्यक्रमों एवं संगोष्ठियों के माध्यम से इनके प्रति समाज को सतर्क-जागरूक करने का कार्य कर रहा है। अपनी भावी पीढ़ी को इनके प्रति सचेत रखना हमारा अन्यतम उद्देश्य है।

हर दौर में, सम्मेलन ने समाज की जरूरतों को पहचानते हुए यथासम्भव सहयोग का हाथ बढ़ाया है। गत कई वर्षो से सम्मेलन आर्थिक रूप से कमजोर मेधावी छात्र-छात्राओं की शिक्षा में सहायता हेतु प्रयत्नशील है। स्नातक स्तर तक की शिक्षा में प्रादेशिक सम्मेलन सहयोग देते हैं और उच्च शिक्षा तथा प्रोफेशनल कोर्सों में सहयोग हेतु केन्द्रीय सम्मेलन द्वारा स्थापित उच्च शिक्षा कोष से अनुदान दिया जाता है। अब तक ढाई करोड़ रुपयों से अधिक की राशि आवंटित की जा चुकी है। साथ ही, समाज के युवक-युवतियों को रोजगार में सहायता हेतु रोजगार सहायता उपसमिति का गठन किया गया है जिसके माध्यम से सैकड़ों युवक-युवतियों को रोजगार उपलब्ध कराया जा चुका है। इनके अलावा, प्राकृतिक आपदाओं की स्थिति में भी, सम्मेलन ने यथासम्भव सहयोग का हाथ बढ़ाया है। बाढ़, भूकम्प, तूफान आदि आपदाओं की स्थिति में सम्मेलन ने अपना भरपूर सहयोग करते हुए प्रताड़ित लोगों के पुनर्वास एवं राहतकार्यों में यथासम्भव सहयोग प्रदान किया है।

गत कई महीनों से, संपूर्ण विश्व एक अनदेखे-अंजाने संकट का सामना कर रहा है। एक छोटे से वायरस ने पूरी दुनिया को घुटनों पर ला दिया है। क्या विकसित राष्ट्र और क्या पिछड़े राष्ट्र – सब समान खौफ से गुजर रहे हैं। सबसे बड़ी दुविधा ये है कि अभी तक हमें ये भी पता नहीं कि इस समस्या से छुटकारा कब तक मिलेगा। इस संकट की स्थिति में, पूरे देश पर जीवन का और देश की लगभग २५ प्रतिशत आबादी पर जीविका का संकट छाया हुआ है। इन परिस्थितियों में, सम्मेलन ने अपना ध्यान समाज के उन संसाधनहीन लोगों की सहायता पर केन्द्रित किया है जो इस महामारी की वजह से प्रभावित हैं। **सम्मेलन अपनी प्रादेशिक शाखाओं के साथ मिलकर समाज के इस प्रभावित वर्ग को सहायता प्रदान कर रहा है। जरूरतमंद लोगों को खाद्य-पदार्थ, दवाईयाँ, मास्क एवं अन्य जरूरी सामान मुहैया करवाये जा रहे हैं। दूसरे राज्यों में फँसे प्रवासियों की घर-वापसी का इंतजाम भी किया गया है।** इसी क्रम में, गत दिनों कोरोना राहत सेवाकार्य समिति का गठन किया गया है जिसके अन्तर्गत कई सेवा प्रकल्प हाथ में लिए गये हैं। **पूरे देश में अभी तक लगभग एक लाख मास्क का वितरण किया जा चुका है। इसके अलावा, मारवाड़ी सम्मेलन भोजनालय कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ है।** कोलकाता के विभिन्न स्थानों में निर्धनतम तथा वंचित तबकों के ३०० लोगों को रोजाना निःशुल्क भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है। यह एक पायलट प्रोजेक्ट है एवं अन्य शहरों में भी यह कार्यक्रम चलाने का विषय विचाराधीन है।

मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि आप सबके सहयोग एवं मार्गदर्शन से सम्मेलन आगे भी समाजहित एवं जनकल्याण में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देता रहेगा। **कोरोनाकाल में आप और आपका परिवार स्वस्थ-सुरक्षित रहे, इस मंगलकामना के साथ... जय समाज, जय राष्ट्र!**

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा कोरोना राहत सेवाकार्य

मारवाड़ी सम्मेलन भोजनालय का हुआ शुभारम्भ

लगातार, प्रतिदिन होगा निःशुल्क भोजन वितरण

गरीबों एवं वंचितों के लिए स्वस्थ भोजन की व्यवस्था

"कोरोना महामारी के प्रकोप से देश एवं समाज के गरीब एवं वंचित वर्ग, खासकर दैनिक कमाई करने वाले, बड़ी कठिनाइयों से जूझ रहे हैं और उनके सहयोग के लिए यथासम्भव प्रयास करना हमारा नैतिक कर्त्तव्य है।" ये वक्तव्य हैं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री संतोष सराफ** के जो उन्होंने एल्गिन रोड, कोलकाता स्थित सुप्रसिद्ध गोलमंदिर के सामने कोरोना राहत सेवाकार्य के अंतर्गत '**मारवाड़ी सम्मेलन भोजनालय**' कार्यक्रम के उद्‌घाटन समारोह में व्यक्त किये। कार्यक्रम का आयोजन गत १७ सितम्बर २०२० को सम्मेलन द्वारा किया गया।

उद्‌घाटन करते हुए श्री सराफ ने बताया कि सम्मेलन के वरिष्ठतम पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री सीताराम शर्मा** की चेयरमैनशिप में मारवाड़ी सम्मेलन कोरोना राहत सेवाकार्य समिति का गठन किया गया है और समिति ने इन विकट परिस्थितियों में आमजन की सहायता हेतु कई कार्यक्रम हाथ में लिए हैं।

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं कोरोना राहत सेवाकार्य समिति के चेयरमैन श्री सीताराम शर्मा ने बताया कि मारवाड़ी सम्मेलन भोजनालय कार्यक्रम के अंतर्गत अब से जून २०२१ तक प्रतिदिन कोलकाता के अलग-अलग स्थानों पर निर्धनतम लोगों के लिए निःशुल्क भोजन वितरित किया जायेगा और आवश्यकतानुसार इस कार्यक्रम को आगे भी बढ़ाया जाएगा। उन्होंने बताया कि सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण **सर्वश्री नंदलाल रुँगटा, डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया, रामअवतार पोद्दार, प्रह्लाद राय अगरवाला,** निर्वाचित अध्यक्ष **श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया,** पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री **श्री भानीराम सुरेका** एवं उद्योगपति-समाजसेवी **सर्वश्री रघुनंदन मोदी, जगदीश प्रसाद चौधरी, राजाराम भिवानीवाला** इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन में मार्गदर्शन एवं हर तरह से सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि कोरोना एक अभूतपूर्व वैश्विक संकट है जिससे निपटने के लिए हर स्तर पर, सबको साथ आकर कदम उठाना होगा। उन्होंने कहा कि कुछ दिनों पूर्व सम्मेलन द्वारा निःशुल्क मास्क वितरण का राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है जिसकी पूरे देश में सराहना हो रही है। निःशुल्क भोजनालय कार्यक्रम के प्रति भी समाजबंधु अत्यंत उत्साहित हैं और गरीबी तथा भूखमरी की वर्तमान स्थिति के आलोक में, सम्मेलन का अपनी प्रादेशिक शाखाओं के माध्यम से, पूरे देश के विभिन्न शहरों में मारवाड़ी सम्मेलन भोजनालय स्थापित करने का विचार है।

ज्ञातव्य है कि विश्वप्रसिद्ध समाजसेवी संस्था **लायन्स क्लब इंटरनेशनल** की डिस्ट्रीक्ट ३२२बी१ शाखा सम्मेलन के निःशुल्क भोजनालय कार्यक्रम के प्रबन्धन में सहयोग कर रही है। डिस्ट्रिक्ट की डिस्ट्रिक्ट गवर्नर **श्रीमती लेखा शर्मा** एवं पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर **श्री कैलाश खण्डेलवाल** उद्‌घाटन के अवसर पर उपस्थित थे। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ ने कार्यक्रम में सहयोग हेतु इन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हुए लायन्स के पदाधिकारियों **श्री पवन परसरामपुरिया** एवं **श्री अनंत शर्मा** का भी आभार व्यक्त किया। उद्‌घाटन समारोह में सम्मेलन के राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री **श्री संजय हरलालका** एवं **श्री दामोदर प्रसाद बिदावतका,** पश्चिम बंग सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री नन्दकिशोर अग्रवाल, पवन जालान, मनोज चाँदगोठिया** सहित सम्मेलन एवं लायन्स क्लब के सदस्य-कार्यकर्ता उपस्थित थे।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा कोरोना राहत सेवाकार्य

देशव्यापी निःशुल्क मास्क वितरण का कार्य आरम्भ

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के कोरोना राहत सेवाकार्य के अन्तर्गत देशव्यापी निःशुल्क मास्क वितरण का शुभारम्भ गत ०२ सितम्बर २०२० को हुआ। कालीघाट, कोलकाता स्थित विश्व प्रसिद्ध कालीमंदिर के प्रांगण से दर्शनार्थियों, निर्धनतम वर्ग, पुजारियों के बीच सम्मेलन के कार्यकर्ताओं द्वारा मास्क वितरित कर इस पुनीत कार्य का शुभारम्भ हुआ।

कोरोना महामारी के प्रकोप से देश एवं समाज के गरीब एवं वंचित वर्ग को राहत देने हेतु सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री संतोष सराफ** ने एक देशव्यापी कार्यक्रम हाथ में लेते हुए '**मारवाड़ी सम्मेलन कोरोना राहत सेवाकार्य समिति**' का गठन सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री सीताराम शर्मा** की चेयरमैनशिप में किया।

समिति के चेयरमैन श्री शर्मा ने कहा कि कोरोना संक्रमण से बचने के लिए मास्क प्राथमिक रूप से अनिवार्य है। देश में ऐसे लोग जिनके पास मास्क उपलब्ध नहीं है, उन वंचित तबकों के पास पहुँचने का सम्मेलन प्रयास कर रहा है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि कोरोना महामारी पर शीघ्र ही विजय प्राप्त कर ली जायेगी और जल्द ही ईलाज भी उपलब्ध हो सकेगा लेकिन सम्भवतः लम्बे अर्से तक मास्क पहनने की आवश्यकता हो सकती है।

श्री शर्मा ने बताया कि देशव्यापी निःशुल्क मास्क वितरण के अंतर्गत पहली खेप में एक लाख मास्क पटना, राँची, रायपुर, हैदराबाद, बेंगलुरु, चैन्नई आदि भेजने का काम प्रारम्भ हो गया है। प्रांतीय एवं प्रमंडल सम्मेलनों को वितरण के कार्य का भार सौंपा गया है। उन्होंने बताया कि सम्मेलन द्वारा निःशुल्क वितरित मास्क एकदम सुरक्षित दो लेयर का है तथा सूती कपड़े से बने इस मास्क को दिन भर पहनने के बाद रात को धो-सुखाकर अगले दिन फिर से पहना जा सकता है।

श्री शर्मा ने बताया कि वर्तमान कोरोना महामारी का देश के हर समाज एवं वर्ग पर बन्दी के चलते आर्थिक काम-धंधों और रोजगारी पर ही प्रभाव नहीं पड़ा है बल्कि मानसिक तनाव भी बढ़ा है। ऐसे कठिन समय में सदैव की भाँति समाजबंधु सेवाकार्य में तत्परता से आगे आ रहे हैं। सम्मेलन मास्क वितरण की पहली एक लाख की खेप के लिये **रसोई फाउंडेशन, द्वारकादास सीताराम शर्मा ट्रस्ट** एवं **अपना लॉजिस्टिक्स प्रा. लि.** का आभारी है। सम्मेलन सुख्यात साड़ी निर्माता '**मीनू**' के उपक्रम '**आर्टव्यू मर्चेन्ट्स प्रा. लि.**' के प्रति भी आभार प्रकट करता है जिन्होंने सिर्फ उत्पादन मूल्य पर मास्क मुहैया करवा कर सहयोग दिया है। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षों **श्री नंदलाल रुँगटा, डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया, श्री रामअवतार पोद्दार** एवं **श्री प्रह्लाद राय अगरवाला** के परामर्श से मारवाड़ी सम्मेलन राहत सेवाकार्य के अन्तर्गत कई राहत के कार्य हाथ में लेने पर विचार कर रहा है।

समाचार सार

कोलकाता स्थित कालीघाट एवं मुंशीगंज में 'एकटू दिन' संस्था की संचालिका सुश्री अदिति रॉय घटक की देखरेख में सम्मेलन द्वारा प्रदत्त मास्क वितरित किए गए। सर्वश्री/श्रीमती/सुश्री सास्वति अरोड़ा, दिशा, दीपाली भट्टाचार्य, अनुराधा भट्टाचार्जी, इन्दिरा कांजीलाल, इन्द्र दासगुप्ता, गार्गी गुप्ता, सयंतनी बनर्जी, सोमा घोष, अर्पिता टूटू भट्टाचार्जी, रत्नाबोली राय, आयेशा सिन्हा आदि ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

सम्मेलन के कोरोना राहत सेवाकार्य के अन्तर्गत निःशुल्क भोजन वितरण

कालीघाट : ११-१६ सितम्बर २०२०

एस.एन. बनर्जी रोड (कोलकाता कॉर्पोरेशन) : १८-३० सितम्बर २०२०

सम्मेलन के कोरोना राहत सेवाकार्य के अन्तर्गत निःशुल्क भोजन वितरण

२२ सितम्बर २०२० को मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी अस्पताल, बड़ाबाजार के समक्ष निशुःल्क भोजन वितरण

२८ सितम्बर २०२० को भूतनाथ मंदिर, निमतल्ला के निकट निःशुल्क भोजन वितरण

बिहार सम्मेलन द्वारा प्रादेशिक सभा का आयोजन

महेश जालान ने किया बिहार प्रादेशिक अध्यक्ष का पदभारग्रहण

"**मारवाड़ी समाज के लोग जिस भी देश और प्रदेश में रहते हैं वहाँ के स्थानीय लोगों की बेहतरी के लिए कार्य करना अपना प्राथमिक कर्त्तव्य समझते हैं और इसके लिए वे किसी संस्था या सरकार पर निर्भर न रहकर केवल अपने संसाधनों का इस्तेमाल करते हैं।**" ये उद्‌गार हैं बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के निर्वाचित अध्यक्ष **श्री महेश जालान** के जो उन्होंने बिहार सम्मेलन द्वारा आयोजित प्रादेशिक सभा में अपने पदभारग्रहण के बाद व्यक्त किये। प्रादेशिक सभा का आयोजन गत २७ सितम्बर को जूम ऐप पर वीडियो माध्यम के द्वारा किया गया।

श्री जालान ने कहा कि बिहार में विधानसभा चुनाव का बिगुल बज चुका है। इस बार मारवाड़ी समाज सक्रिय राजनीति में भागीदारी के लिए हर स्तर पर तैयारी करेगा और समाज एवं राज्य की भलाई के लिए स्वच्छ छवि वाले ईमानदार और चरित्रवान लोगों का साथ देगा ताकि बिहार को विकसित राज्यों की पंक्ति में सबसे आगे खड़ा किया जा सके।

प्रादेशिक सभा का उद्‌घाटन कोलकाता से सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं कोरोना राहत सेवाकार्य समिति के चेयरमैन **श्री सीताराम शर्मा** ने किया। उन्होंने बताया कि पूरे देश में कोरोना त्रासदी के दौरान मारवाड़ी समाज द्वारा अभूतपूर्व कार्य किये गए। सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री संतोष सराफ** ने बताया कि कोरोना राहत सेवाकार्य के अन्तर्गत समाज के वंचित तबकों के लिए कोलकाता में प्रतिदिन तीन सौ लोगों को निःशुल्क भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह व्यवस्था आने वाले समय में सभी प्रांतों में लागू की जायेगी। राँची से निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** ने महेश जालान को शुभकामनाएँ देते हुए उम्मीद व्यक्त की कि इनके नेतृत्व में बिहार सम्मेलन हमेशा की तरह राज्य में सेवा और विकास का कार्य जारी रखेगा।

प्रादेशिक अध्यक्ष **श्री बिनोद तोदी** ने वर्तमान सत्र में किये गये कार्यों का ब्यौरा प्रस्तुत किया और अपने कार्यकाल में उत्कृष्ट कार्य करने वाली शाखाओं और पदाधिकारियों को दिये जाने वाले पुरस्कारों की घोषणा की। सम्मेलन के प्रादेशिक कार्यालय में डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड की स्थापना की गई जिसका उद्‌घाटन पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री कमल नोपानी** एवं निवर्तमान प्रादेशिक अध्यक्ष **श्री निर्मल झुनझुनवाला** ने संयुक्त रूप से किया।

बैठक के दौरान कोरोना से संबंधित सभी दिशानिर्देशों का पूर्ण रूप से पालन किया गया। बैठक में **सर्वश्री अंजनी सुरेका, अरुण रुँगटा, राजीव केजरीवाल, अनूप पारीक, संजीव देवड़ा, गिरधारी लाल सराफ** सहित प्रादेशिक पदाधिकारियों के अतिरिक्त प्रदेश के विभिन्न जिलों से वीडियो माध्यम द्वारा लगभग एक हजार सदस्य उपस्थित थे।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की कोरोना राहत सेवाकार्य समिति द्वारा प्रदत्त मास्कों का प्रदेशों में वितरण

राँची : १०-११ सितम्बर २०२०

पटना : १३ सितम्बर २०२०

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की कोरोना राहत सेवाकार्य समिति द्वारा प्रदत्त मास्कों का प्रदेशों में वितरण

रायपुर : २२ सितम्बर २०२०

कृष्ण दिवानी

— जयप्रकाश सेठिया

मीरां महारानी
कृष्ण दिवानी
सबसे उसकी
अलग कहानी
छोड़ दिया संसार
स्थूल देह की आशक्ति
रह गई केवल भक्ति
त्याग दिया परिग्रह
त्याग दिया विग्रह
त्याग दी राग
हो गई वीतराग

डूब गई
सत् कर्म के मर्म को
आत्मसात् करने वाले
कृष्ण कन्हैया में
पैठ गई
बैठ गई
उस महा समर्पण की नैया में
मिट गया भेद
सब हो गया अभेद
रख दी
आत्मा से आत्म मिलन की

अद्भुत मिशाल
था हृदय इतना विशाल
कर लिया प्रभु को
इस पंचभूत में
आत्मसात्
नहीं रह गई
'स्व' की अनुभूति
केवल मात्र रह गई
कन्हैया की भक्ति
बन गई स्वयं विभूति।

संवेदना के सागर : महाकवि कन्हैयालाल सेठिया

– स्व. जुगल किशोर जैथलिया

संवेदना के सागर थे महाकवि कन्हैयालाल सेठिया। देश के प्रति, समाज के प्रति, प्रकृति के प्रति और प्राणिमात्र के प्रति उनके हृदय में संवेदना की लहरें प्रवाहित होती रहती थी, इसी कारण वे जितने बड़े कवि थे, उतने ही बड़े लोक सेवक भी थे। अद्‌भुत था उनके जीवन में यह मणिकांचन संयोग। इसी संवेदना के कारण उन्होंने अपनी कृतियों में जीवन के हर पहलू को छुआ है। आपके काव्य में देशभक्ति का उत्कट भाव है, पिछड़ों-दलितों-वंचितों एवं महिलाओं को उठ खड़े होने की हुंकार है, रूढ़ियों पर तीव्र प्रहार है, प्रकृति के राग-रोगन का अनूठा वर्णन है। आध्यात्म के अभ्यन्तर स्वरूप की सहज व्याख्या है और इन सब की अभिव्यक्ति में शब्दों का सहज एवं अभिनव चयन है।

१९३६ ई. में १७ वर्ष की उम्र में जब से उन्होंने कलम उठाई, उनके गीत लोगों का कण्ठहार बन गए। विदेशी दासता के विरुद्ध उठ कर खड़े रहने के लिए उन्होंने 'पातळ'र पीथल' गीत के माध्यम से प्रताप का शौर्य बखानते हुए बिना झुके और बिना रुके आजादी की लड़ाई लड़ते रहने का आह्वान किया है –

मैं झुकूं कियाँ? है आण मनैं कुल रा केशरिया बानां री,
मैं बुझूं कियां? हूँ सेस लपट आजादी रै परवानां री।

जमींदारों के अत्याचारों के विरुद्ध किसानों का पक्ष लेते हुए उन्होंने 'कुण जमीन रो धणी?' गीत लिखते हुए पूछा कि जमीन का असली मालिक कौन है? - अत्याचारी जमींदार या मेहनतकश किसान?

कुण जमीन रो धणी?
हाड़ मांस चाम गाळ, खेत में पसेव सींच
लू लपट ठंड मेह, सै सवे दांत भींच।
फाड़ चौक कर करै, जोतणी'र बोवणी,
बो जमीन रो धणी क, ओ जमीन रो धणी?

इसी कालखंड में लिखा गया राजस्थान की यशोगाथा कहनेवाला गीत 'धरती धोरां री' तो पूरे राजस्थान एवं राजस्थानी का प्रतिनिधि गीत बन गया और आज भी पूरे विश्व के राजस्थानी समाज के हर उत्सव का प्राणगीत बनता है। **वरिष्ठ साहित्यकार बालकवि बैरागी का कहना है कि सेठियाजी अगर और कुछ न लिख कर यही गीत लिखते तो भी वे अमर हो जाते। यह गीत वैसा ही है जैसा ऋषि बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय का 'वन्देमातरम्' एवं इकबाल का 'सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा।'**

१९४२ ई. के भारत छोड़ो आन्दोलन के अवसर पर प्रकाशित 'अग्निवीणा' तो मानो देशभक्ति के गीतों की मशाल हो। इसके कतिपय गीत जैसे – 'अग्निवीणा झनझना दो, आज बज उठी है रणभेरी', 'आज पड़ा माँ पर संकट' प्रभृति ने लोगों को इतना दीवाना बना दिया कि इस पुस्तक पर बीकानेर राज्य की ओर से देशद्रोह का मुकदमा ठोका गया जो आजादी के बाद ही खत्म हुआ। एक बानगी देखें :-

आज हमारी रग-रग में है, महाप्रलय की बिजली दौड़ी।
अब न अधिक अन्याय सहेंगे, हमने युग की रासें मोड़ी।।

१९६२ ई. में चीनी आक्रमण के समय आपने 'चीन को ललकार' एवं 'रक्त दो' नामक दो लघु पुस्तिकायें लिखीं जिनमें क्रमशः १३ एवं ११ जोशीली कविताएँ थी। बानगी देखें :

'पहरुए जननी की जय बोल।
सुन हो जिसे दिशायें बहरी, डूबे बैरी की रणभेरी,
आज देश की हदें हड़पने, निकले हैं मंगोल! पहरुए....।।
पंचशील की खाल ओढ़कर, बन्धु बना था जो पशु बर्बर,
वही चाहता चीन बदलना, भारत का भूगोल।। पहरुए....।।
उठो हिन्दियों आज काल की, खुली चुनौती झेलो,
आँगन में आए अरिदल को, सीमा पार धकेलो।'

ये दोनों ही पुस्तिकायें सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर व्यापक रूप से प्रचारित हुई। यह लेखन का क्रम २००१ ई० तक लगातार सात दशक तक अबाध चलता रहा, इसमें उन्होंने हिन्दी में १८, राजस्थानी में १४ एवं उर्दू में २ काव्यग्रंथों की रचना की।

हिन्दी में प्रणाम के बाद की सभी रचनायें एवं राजस्थानी में दीठ के बाद की सभी रचनायें मुख्यतः आध्यात्मपरक एवं दर्शनप्रधान है। इन रचनाओं में भारतीय दर्शन की विशिष्टता और वेदान्त की निगूढ़तम अनुभूतियों को जिस सरल, सरस एवं हृदयग्राही तथा कम से कम शब्दों में अभिव्यक्ति किया है, वह चिन्तकों एवं साधकों की जिज्ञासाओं एवं शंकाओं का शमन करने एवं दिशाबोध देने में समर्थ है। निर्ग्रन्थ में तो उन्होंने मार्क्स की एकांगी दृष्टि को आड़े हाथों लेते हुए कहा है :

'नहीं हुआ अनुभूत साम्य का योग,
हाथ लगा केवल साम्य भोग।'

मर्म एवं अनाम में उनकी मंत्रवत् दार्शनिक उक्तियाँ सीधे हृदय को छूती हैं :

नर बन नारायण स्वर बन रामायण। (मर्म)
मरूँगा/सब की तरह/ जीवूंगा अपनी तरह। (अनाम)

साहित्य सृजन के साथ-साथ आप बहुत बड़े लोकसेवक भी थे। बाल्यकाल से ही आपने हरिजन शिक्षा एवं जातिगत भेदभाव मिटाने हेतु बहुत संघर्ष किया। आपने अपने घर में ही १९४० ई. में हरिजनों के लिए विद्यालय प्रारंभ किया एवं बाद में राजकीय विद्यालय की भी स्थापना करवायी। साथ ही रोजगार सृजन हेतु महिलाओं के लिए सिलाई एवं पुरुषों के लिए भी रोजगार मूलक प्रशिक्षण प्रारम्भ किये। अपने बड़े पुत्र के विवाह की बारात में हरिजनों को शामिल कर एक आदर्श स्थापित किया। उस कालखंड में ऐसा करना बहुत बड़े साहस का काम था। इसके अलावा देश भर में बीसियों अस्पताल, छात्रावास, महिला विद्यालय, स्वास्थ्य-केन्द्र, संस्कार केन्द्र तथा बाल केन्द्रों की स्थापना भी आपके मार्गदर्शन एवं सहयोग से हुई। कार्यकर्ताओं के सुख-दुःख में आप सहज शरीक होते थे एवं उनकी पितातुल्य सम्हाल रखते थे। इतने पर भी आप अर्थ-व्यामोह से सदैव दूर रहे। इस क्षेत्र में भी आप विरल थे। यद्यपि उनका पार्थिव शरीर आज नहीं है पर वे अपने काव्य के माध्यम से सदैव हमारे बीच में उपस्थित रहेंगे।

सबद मनीषी सेठिया री काव्य चेतना

— डॉ. रमेश "मयंक"

राजस्थानी भाषा-साहित्य रै खेतर मांय "पद्मश्री" अलंकरण सूं सम्मानित राजस्थानी रा मनीषी-कवि कन्हैयालाल सेठिया आगीवाण रैया, सुतंत्रता संग्राम मांय अलख जगाई, राजस्थानी भाषा री मान्यता सारू पीड़ तैवड़ी, जन जागरण अर संघर्ष ने कविता रो सुर बणायो। आपरी लेखकीय दीठ अर चेतना सूं भाषा री सिमरधता, प्रान्तीय जस संस्कृति रो बखाण सामै आ सक्यो। कन्हैयालालजी सेठिया राजस्थान अर राजस्थानी री दीठ अर ओलखाण, धरती री सुगंध अर समझ, साहित्य-कला-सांस्कृतिक परम्परा मांय भारतीय मिनखपणो, गुणवत्ता सागै आंचलिकता रा भाव अंगेजण वाला ठावा-चावा है। मिनख री महता रो बखाण करणिया री चेतना मानवतावादी है।

मैं थमूं जठै ही मजलां है, मैं खोज मांडद्यूं बै गेला
मैं सुण्या अणसुण्या कर चालूं नित मौज मिजाजण रा हेला
कुण जलम्यौ म्हारी होड़ करै, धरती पर कोई जोड़ नहीं
मैं मिनख जठै नीं पूग सकूं, बा रची रामजी ठौड़ नहीं

मरूभोम रो मिनख जल चेतना ने हिवड़े अंगेजे, जळ जूठै भविष्य रो सुपनो, आशा रो भाव, पग-पग पाणी डग-डग रोटी रो सपनो जो मैंणत पुरुषारथ रे पाण देखे– "आज पून रै सागै फसलां, ऊभी नाचै गावै, थारे पळसै बारै जुगरी, गंगाजी लैरावै सूं सामै राखै।

राजस्थानी भाषा री चेतना दीठ मांय आगीवाण रैया सेठियाजी री मानता ही आ भाषा आखो राजस्थान जोड़सी–

खाली घड़ री कद हुवै, चैरे बिन्या पिछाण?
मायड़ भाषा रै बिन्या, क्यां रौ राजस्थान?
वीर भूमि री त्याग भूमि री, नहीं खैली ओप
बिना मान्यता जन भासा नै, कीरत ज्यासी लोप

राजस्थान रै जन जीवण, सभ्यता, संस्कृति री संवेदना मिनख मांय नीतिगत चेतना रो लौकिक संचार करण वाली पैली पोथी - "रमणियां रा सोरठा" (१९४०) मांय चिंता कोनी करणी चाइजै, संसार मतलबियां रो है, चरखा सूं गरीबी मिटै विद्या घणी जरूरी हुवै आदि बातां अंगेजी,

चिंता दुख रौ धाम, तन देवै सगळो गळा
ज्यूं जूतै रौ चाम, रांपी छेके रमणियां

कवि सेठिया लोक व्यवहार रा गुरुजी बण'र सीखावै- हिम्मत रा सुख साज, हिम्मत री कीमत घणी, चरखौ सांचो शस्त्र- मिटै गरीबी देश री, घमंड नीं करणो, मीठा वचन बोलणो, खोटा मिनखां रो साथ कोनी करणो, लालच बुरी बला, सोच- समझ'र बोलणो चाइजै–

मीठा वचन उचार, सुख पावै काया घणी
कड़ुआ बोल्यां खार, रंग रचावै रमणियां

जीभ बढ़ावै बैर, जीभ जुड़ावै प्रीत नै
राखी चाहो खैर, रसना वश में रमणिया

कवि री अध्यात्म चेतना, दर्शनपरक अनुभूति सदीव खास रैयी–मंदिर-मस्जिद में कोनी बसे भगवान वो तो – "भगता रो दास" है। मिनख ने चाइजै-आपणी काया रा मैल-हरिनाम रा स्याबण सूं धौवे। जीवण री नश्वरता री भागवत काव्य चेतना मींझर में उभरै-माळीड़ा मत चूंट, फूल तो आपै ही कुमलासी, घड़ी स्यात अे और मुळक लै, फेर कदे न आसी प्रगति शील विचार धारा रो मंडाण उणां री ढावी-चावी कविता, कुण जमीन रो धणी मांय सबला रूप में हुयो।

हाड़, मांस, चामगाळ, खेत में पसेव सींच
लू, लपट, ठंड, मेह, सै सवै दांत भींच
फांड़ चौक कर करै जोतणी' र बोवणी
बौ जमीन रौ धणी क-औ जमीन रो धणी

सत्वाणी (१९८७) मांय कबीर दर्शन रा चिंतन री गैराई है तो जैन दर्शन रा पंच महाव्रत रो प्रभाव भी है। स्याही कागद कलम जड़, आखर है निष्प्राण, सबद जलमसी जद हुसी, संवेदन मय प्राण-मिनख आंगळ नींव पे दसखंडौ मैल चिणै पण आतमा री पिछाण कोनी करै–

जकी चेतना जीव में वीं री कोनी याद
मुगत हुय'र परमाद सूं, कर अणभूत अनाद

ओ आत्म तत्त्व 'सबद' (१९८५) मांय कलम रे पाण उभर्यो-बूंद आप में समद है, समद आप में बूंद, लख रै सागै अलख है, अलख सदा लख साथ, सबद-अरथ घाळयां बगै, ज्यूं परतख गळ बाथ अर मैमा मोटी सबद री, सबद बिरम है, सबद साधण सूं तीनूं ताप मिटसी–

सबद हंस ऊपर उड्यौ, सुर री पांखां खोल
गगन बिरम सूं ज्या मिल्यौ, अणहद उपन्यौ बोल
धरती कागद हळ कलम, बिरखा मसि रौ नीर
बाया आखर बीज जद, सबद उग्या गंभीर

आ पोथी सिरजण चेतना रो काव्य दीठ सूं अेलाण है। कूं कूं मांय सबदां रे माध्यम सूं - "गागर मांय सागर'री भावना है। अठै, कवि री प्रकृति परक चेतना री गैरी समझ लखावै – समदर- धरती रौ कळ्यादार घाघरौ/आभौ-बादळां री कोरी दियोड़ी लूघड़ी। तावड़ी-सोनल कांचळी। फतूई सुआपंखी दूबड़ी। म्हैं घणे गुमैज सागै कैय सकूं क सेठिया री कलम खिमता ही लिख सकै गगन लीलौ नारेळ, चांद काची गिरी अर भूखै बगत रै हाथ में अमावस री छुरी। श्री राधेश्याम सराफ मुजब "कुदरत'र परमात्मा रै सागै आतमा री अपणायत "लीलटांस" रो मूळ सुर है। अठै रहस्यवादी चिंतन री चेतनापरक दीठ मुंडे बोलै पण नवीनता रै सागै बंसरी में पांच'र संख में अेक छेद, अतौ ही राग'र नाद में भेद, अेक परतख गीता, देजौ सैंदेही वेद।

श्री लक्ष्मीनिवास झुनझुनवाला धर कूंचां धर मजलां मांय अनुरक्ति विरक्ति रो अनोखौ सामंजस्य दैखै।

काया ऊपर मांडणां, मिनख भलांई मांड
पण तरपण कोनी बणै, थारै लारै भांड
धड़ मूरत सेवै पछै, आप घड़ाईदार
इयां भगत रो दास है, परतख सिरजण हार

अघोरी काळ (१९८७) मांय राजस्थान वासियां री जुझारू प्रवृत्ति रे मिस संघर्ष चेतना री काव्य दीठ रो सिरजण है। लूंठी भूख/मंडग्यौ/नागड़ी मौत रे घरां। मोटौ उच्छब। दीठ (१९८८) मांय सनातन अर आज री समन्वयवादी चेतना री छिब ने कलम री कोरणी सूं उकेरी है। जो व्यापक दीठ रो आभास-अहसास है। साच-जुग धरम, भेद-अभेद, निज विवेक, आत्म शोधन री प्रेरणा रा दरसण हुवै– गमगी सबदां री अड़ाभीड़ में बापड़ी कविता। फिरै सोधती जायोड़ी नै मावड़ी संवेदना अर आत्मा धरती रो गिगनार, कोनी सकै नकार, इण साच नै माटी। कक्कौ कोड़ रौ (१९८९) मांय प्रकृति रो रचाव है। प्रकृतिवादी चेतना रोहीड़ौ, मतीरो, रात-दिन, सवाल, मन, मिनख रे मिस वैचारिक गांभीर्य री पड़ताल हुवै। दीखै परतख, पड़ै सिरजण रै पेली, धरती ने तपणो। कविता सारू दीठ चाइजै-सोनेरी कलम'र चांदी री दवात सिरजण रा सिरी रे किण काम री?

लीक लकोळिया (१९८९) विनय अर शालीनता रे सागै संस्कार पथ रा निरमाण री काव्य चेतना रो बधोपो करै। बड़ग्यौ म्हारे में स्यांच्याई राम। जीं खिण दिख्यौ दीठ नै/लीकल लकोळिया में थारौ चितराम।

सन् १९४० सूं १९९९ तांई-हेमाणी रचाव हुयो। छह दसकां री काव्य जातरा, सबदलोक रो विचरण, कलम रो हेमाणी रचाव अनुभव जगत ने सिमरध कर्‌यो। अनुभव-सबद अेकाकार हुआ। हेमाणी मांय केई शाश्वत सत्यां री चेतना रो बिगसाव लखावै।

जीवण'र मरण दोन्यूं जामण जाया सागी भाई
पण कोनी करै कदैई, आपस में हताई

कवि रो निजू आत्म दर्शन घणो अणमोल है – सुरसत मां सूंप्यो मनै, सबद रतन अणमोल, लिछमी मासी वर दियौ तुलसी हीरां तोल, अर-कोनी मिल्यो निज सूं। जे मिल लेतौ-मिट ज्यातौ दैत रो दुंद। बण जातो आखर ही छंद।

सेठियाजी री काव्य साधना पे गांधी, नेहरू रो खासो प्रभाव रैयो। उणां नेहरूजी नै पाती लिखी तो गांधीजी पे वे कुण गमग्या जैड़ी कविता लिखी। पातळ-पीथळ, धरती धोरां री उणां री काळजयी रचनावां है। राजस्थानी मांय १४, हिन्दी मांय १८ पोथ्यां रो सिरजण हुयो जो घणोमहताऊ है। हिन्दी मांय जातरा वनफूल (१९४०) सूं त्रयी (२००१) तक री रैयी।

इण भांत-सबद मनीषी सेठियाजी री काव्य चेतना मांय केई पड़ाव आया। धर कूंचा-धर मजलां करता थका न्यारी, निरवाळी काव्य चेतना रो मंडाण हुयो। इण रा गहन अध्ययन सूं केई पख उजागर होसी। सिरजण, चिंतन, मनन रो मारग लम्बो है। पखेरूआं सारू उडणे ने आकास छोटो कोनी लखावै।

('जागती जोत' से साभार)

जय कन्हैयालाल

– बंशीधर शर्मा

सिरैमोड़ नर 'सबद' रो
हीरो कहूं'क लाल
नर कहूं'क नखतरी
तनैं कन्हैया लाल।

कोरी कोगद नै कर्‌यां,
कदै न सुळझै सूत,
'मायड़ रो हेलो' सुणे
बो है पूत-सपूत।

जाण जुगारो जगत रो,
आखर रो उनमान
अळी-सळी रळकाय कर
गयो चालणी छांण।

'सतवाणी' री सिरजना
मरम हिये रो जाण,
जुग पुरषां री गिणत मं
थारी हुई पिछाण।

सोनेली 'मींझर' बणी,
मधरी घणी सरूप,
'कूं कूं' मन री ओपमा
साख संवारै रूप।

'धर कूंचा धर मज्जलां'
चाल्यां आसी ठीक
'दीठ' सदा पैंडो भरे
आ दरशण री लोक।

'कक्को कोडको' भण लियो
'लीक लिकोळ्या' जाण
'हेमाणी' हीरा गड्या
जौहरी करै पिछाण।

धोरां री धरती तणो,
जण जण गावै गान
अमर कन्हैया संग हुयो
रूड़ो राजस्थान।

'गळगचिया' भाटा नहीं
अे मन रा चितराम
मन बुद्धि सुं घस हुया
पत्थर शाळग - राम।

उजळी कीरत रैवसी,
सुण! 'अघोरी काळ'
साहित रो सरताज तूं
जय कन्हैयालाल।

राजस्थानी धरा की कीर्ति का महाकवि सेठिया रचित अमर जनगीत

धरती धोरां री

धरती धोरां री,
आ तो सुरगां नै सरमावै,
ईं पर देव रमण नै आवै,
ईं रो जस नर नारी गावै,
धरती धोरां री!
सूरज कण कण नै चमकावै,
चन्दो इमरत रस बरसावै,
तारा निछरावळ कर ज्यावै,
धरती धोरां री!
काळा बादळिया घहरावै,
बिरखा घूघरिया घमकावै,
बिजळी डरती ओला खावै,
धरती धोरां री!
लुळ लुळ बाजरियो लैरावै,
मक्की झालो दे'र बुलावै,
कुदरत दोन्यूं हाथ लुटावै,
धरती धोरां री!
पंछी मधरा मधरा बोलै,
मिसरी मीठै सुर स्यूं घोळै,
झीणूं बायरियो पंपोळै,
धरती धोरां री!
नारा नागौरी हिद ताता,
मदुआ ऊंट अणूंता खाथा!
ईं रै घोड़ां री के बातां?
धरती धोरां री!
ईं रा फळ फुलड़ा मन भावण,
ईं रै धीणो आंगण आंगण,
बाजै सगळां स्यूं बड़ भागण,
धरती धोरां री!
ईं रो चित्तौड़ो गढ़ लूंठो,
ओ तो रण वीरां रो खूंटो,
ईं रो जोधाणूं नौ कूंटो,
धरती धोरां री!
आबू आभै रै परवाणै,
लूणी गंगाजी ही जाणै,
ऊभो जयसलमेर सिंवाणै,
धरती धोरां री!
ईं रो बीकाणूं गरबीलो,
ईं रो अलवर जबर हठीलो,
ईं रो अजयमेर भड़कीलो,
धरती धोरां री!
जैपर नगरयां में पटराणी,
कोटा बूंदी कद अणजाणी?
चम्बल कैवै आं री का'णी,
धरती धोरां री!
कोनी नांव भरतपुर छोटो,
धूम्यो सूरजमल रो घोटो,
खाई मात फिरंगी मोटो,
धरती धोरां री!
ईं स्यूं नहीं माळवो न्यारो,
मोबी हरियाणो है प्यारो,
मिलतो तीन्यां रो उणियारो,
धरती धोरां री!
ईडर पालनपुर है ईं रा,
सागी जामण जाया बीरा,
अै तो टुकड़ा मरू रै जी रा,
धरती धोरां री!
सोरठ बंध्यो सोरठां लारै,
भेळप सिंध आप हंकारै
मूमल बिसर्यो हेत चितारै,
धरती धोरां री!
ईं पर तनड़ो मनड़ो वारां,
ईं पर जीवण प्राण उंवारां,
ईं री धजा उड़ै गिगनारां,
मायड़ कोड़ां री!
ईं नै मोत्यां थाळ बधावां,
ईं री धूळ लिलाड़ लगावां,
ईं रो मोटो भाग सरावां,
धरती धोरां री!
ईं रै सत री आण निभावां,
ईं रै पत नै नही लजावां,
ईं नै माथो भेंट चढ़ावां,
मायड़ कोड़ां री,
धरती धोरां री!

शब्द

स्त्री पुरुष की तरह
शब्द भी एकान्त में नंगे होते हैं,
कुछ शब्द निहायत शरीफ
कुछ लुच्चे लफंगे होते हैं!

कुछ दुबले पतले
कुछ शब्द भले चंगे होते हैं,
कुछ बड़े सलीके वाले
कुछ बदमिजाज बेढंगे होते हैं!

आदमी की तरह
शब्द भी पूरे सामाजिक होते हैं,
इनके भी परिवार हैं
बाल बच्चे हैं नाती पोते हैं!

शब्द भी बँधे हैं
आदमी की तरह रीति से, रिवाज से
इन्हें भी वास्ता रहता है
कल से, आज से, लिहाज से!

इनमें भी द्विज, शूद्र,
कुम्हार, खाती हैं,
किसी भी रचना में देखिये
एक शब्द दुलहा है
बाकी सब बराती हैं!

(खुली खिड़कियाँ चौड़े रास्ते)

पातळ’र पीथळ

अरै घास री रोटी ही जद बन बिलावड़ो ले भाग्यो।
नान्हो सो अमर्‌यो चीख पड्यो राणा रो सोयो दुख जाग्यो।
हूं लड्यो घणो हूं सह्यो घणो
मेवाड़ी मान बचावण नै,
हूं पाछ नहीं राखी रण में
बैर्‌यां री खात खिंडावण में,
जद याद करूं हळदी घाटी नैणां में रगत उतर आवै,
सुख दुख रो साथी चेतकड़ो सूती सी हूक जगा ज्यावै,
पण आज बिलखतो देखूं हूं
जद राज कंवर नै रोटी नै,
तो क्षात्र-धरम नै भूलूं हूं
भूलूं हिंदवाणी चोटी नै
मै’लां में छप्पन भोग जका मनवार बिनां करता कोनी,
सोनै री थाल्यां नीलम रै बाजोट बिनां धरता कोनी,
अै हाय जका करता पगल्या
फूलां री कंवळी सेजां पर,
बै आज रुळै भूखा तिसिया
हिंदवाणै सूरज रा टाबर,
आ सोच हुई दो टूक तड़क राणा री भीम बजर छाती,
आंख्यां में आंसू भर बोल्या मैं लिख स्यूं अकबर नै पाती,
पण लिखूं कियां जद देखै है आडावळ ऊंचो हियो लियां,
चितौड़ खड़्यो है मगरां में विकराल भूत सी लियां छियां,
मैं झुकुं कियां? है आण मनै
कुळ रा केसरिया बानां री,
मैं बुझूं कियां? हूं सेस लपट
आजादी रै परवानां री,
पण फेर अमर री सुण बुसक्यां राणा रो हिवड़ो भर आयो,
मैं मानूं हूं दिल्लीस तनैं समराट् सनेशो कैवायो।
राणा रो कागद बांच हुयो अकबर रो’ सपनूं सो सांचो,
पण नैण कर्‌यो बिसवास नहीं जद बांच बांच नै फिर बांच्यो,
कै आज हिंमाळो पिघळ बह्यो
कै आज हुयो सूरज सीतळ,
कै आज सेस रो सिर डोल्यो
आ सोच हुयो समराट् विकळ,
बस दूत इसारो पा भाज्यो पीथळ नै तुरत बुलावण नै,
किरणां रो पीथळ आ पूग्यो ओ सांचो भरम मिटावण नै,
बीं वीर बांकुड़ै पीथळ नै
रजपूती गौरव भारी हो,
बो क्षात्र धरम रो नेमी हो
राणा रो प्रेम पुजारी हो,
बैर्‌यां रै मन रो कांटो हो बीकाणूं पूत खरारो हो,
राठोड़ रणां में रातो हो बस सागी तेज दुधारो हो,
आ बात पातस्या जाणै हो
धावां पर लूण लगावण नै,
पीथळ नै तुरत बुलायो हो
राणा री हार बंचावण नै,
म्हे बांध लियो है पीथळ सुण पिंजरै में जंगळी शेर पकड़,
ओ देख हाथ रो कागद है तूं देखां फिरसी कियां अकड़?
मर डूब चळू भर पाणी में
बस झूठा गाल बजावै हो,
पण टूट गयो बीं राणा रो
तूं भाट बण्यो बिड़दावै हो,
मैं आज पातस्या धरती रो मेवाड़ी पाग पगां में है,
अब बता मनै किण रजवट रै रजपती खून रगां में है?
जद पीथळ कागद ले देखी
राणा री सागी सैनाणी,
नीचै स्यूं धरती खसक गई
आंख्यां में आयो भर पाणी,
पण फेर कही ततकाल संभळ आ बात सफा ही झूठी है,
राणा री पाघ सदा ऊंची राणा री आण अटूटी है।
ल्यो हुकम हुवै तो लिख पूछूं
राणा नै कागद रै खातर,
लै पूछ भलांई पीथळ तूं
आ बात सही बोल्यो अकबर,
म्हे आज सुणी है नाहरियो
स्याळां रै सागै सोवै लो,
म्हे आज सुणी है सूरजड़ो
बादळ री ओटां खोवैलो,
म्हे आज सुणी है चातगड़ो
धरती रो पाणी पीवै लो,
म्है आज सुणी है हाथीड़ो
कूकर री जूणां जीवै लो,
म्हे आज सुणी है थकां खसम
अब रांड हुवैली रजपूती,
म्हे आज सुणी है म्यानां में
तरवार र’वेली अब सूती,
तो म्हांरो हिवड़ो कांपै है, मूंछ्यां री मोड़ मरोड़ गई,
पीथळ राणा नै लिख भेज्यो आ बात कठै तक गिणां सही?
पीथळ रा आखर पढ़तां ही
राणा री आंख्यां लाल हुई,

धिक्कार मनै हूं कायर हूं
नाहर री एक दकाल हुई,
हूं भूख मरूं हूं प्यास मरूं
मेवाड़ धरा आजाद रवै
हूं घोर उजाड़ां में भटकूं
पण मन में मां री याद रवै,
हूं रजपूतण रो जायो हूं रजपूती करज चुकाऊंला,
ओ सीस पड़ै पण पाघ नही दिल्ली रो मान झुकाऊंला,
पीथळ के खिमता बादळ री
जो रोकै सूर उगाळी नै,
सिंघां री हाथळ सह लेवै
बा कूख मिली कद स्याळी नै?
धरती रो पाणी पिवै इसी
चातग री चूंच बणी कोनी,
कूकर री जूणां जिवै इसी
हाथी री बात सुणी कोनी,
आं हाथां में तरवार थकां
कुण रांड़ कवै है रजपूती?
म्यानां रै बदळै बैर्‌यां री
छात्यां में रैवैली सूती,
मेवाड़ धधकतो अंगारो आंध्यां में चमचम चमकै लो,
कड़खै री उठती तानां पर पग पग पर खांडो खड़कैलो,
राखो थे मूंछ्यां ऐंठ्योड़ी
लोही री नदी बहा द्‌यूंला,
हूं अथक लड़ूंला अकबर स्यूं
उजड्यो मेवाड़ बसा द्‌यूंला,
जद राणा रो संदेश गयो पीथळ री छाती दूणी ही,
हिंदवाणों सूरज चमकै हो अकबर री दुनियां सूनी ही।

(मींझर)

कुँआरी मुट्‌ठी!

युद्ध नहीं है नाश मात्र ही
युद्ध स्वयं निर्माता है,
लड़ा न जिसने युद्ध राष्ट्र वह
कच्चा ही रह जाता है,
नहीं तिलक के योग्य शीश वह
जिस पर हुआ प्रहार नहीं,
रही कुँआरी मुट्‌ठी वह जो
पकड़ सकी तरवार नहीं,
हुये न शत शत घाव देह पर
तो फिर कैसा साँगा है?
माँ का दूध लजाया उसने
केवल मिट्‌टी राँगा है,
राष्ट्र वही चमका है जिसने
रण का आतप झेला है,
लिये हाथ में शीश, समर में
जो मस्ती से खेला है,
उन के ही आदर्श बचे हैं
पूछ हुई विश्वासों की,
धरा दबी केतन छू आये
ऊँचाई आकाशों की,
ढालों भालों वाले घर ही
गौतम जनमा करते हैं,
दीन हीन कायर क्लीवों में
कब अवतार उतरते हैं?
नहीं हार कर किन्तु विजय के
बाद अशोक बदलते हैं,
निर्दयता के कड़े ठूँठ से
करुणा के फल फलते हैं,
बल पौरुष के बिना शान्ति का
नारा केवल सपना है,
शान्ति वही रख सकते जिनके
कफन साथ में अपना है,
उठो, न मूंदो कान आज तो
नग्न यथार्थ पुकार रहा,
अपने तीखे बाण टटोलो
बैरी धनु टंकार रहा।

(आज हिमालय बोला)

निर्देश

तुम मेरे ही पथ पर चलना
ऐसा मैं निर्देश न दूँगा।

आग्रह करना मम की कुण्ठा
मैं उससे प्रतिबद्ध नहीं हूँ,
मुक्त गगन-सा मेरा चिन्तन
साधक हूँ मैं सिद्ध नहीं हूँ,
तुम्हें खोजना होगा निज पथ
मैं कोई आदेश न दूँगा।

किसका कितना स्व विकसित है
वह उसके कर्मों पर निर्भर,
गाँधीजी, अरविन्द, विनोबा
मनुज देह में थे वे ईश्वर,
निज से मिल लो इतना इंगित
इतर और विशेष न दूँगा।

घातक पापकर्म हैं जिनके
उनको सत का बोध न होगा,
मिथ्या क्रिया करेंगे उससे
आत्मा का परिशोध न होगा,
स्वयं बनो तुम अपने दीपक
मैं कोई उपदेश न दूँगा।

कुछ रचनाएँ सेठियाजी की हस्तलिपि में

सबद

१

धरती कागद हळ कलम
बिरखा मासि रो नीर,
बाया आखर बीज जद
सबद उग्या गंभीर

२

मरज सरै के भीड़ स्यूं
हाथ मिनख रो थाम,
बसै न दिवलो लाय स्यूं
तूली आवै काम

३

दोष दिखै जे और में
निज रो दोष पिछाण,
कर देख्यो कालूंस नै
भुवन दीपतो भाण ।

४

सुघड़ देह रो कुंभ है
पण इन्द्रयां रा छेज,
ऊरजा रो अमरित ढुळै
संजम पाण सहेज

निरर्थक आशंका!

शूली पर है
कुंआरे सत्य की
प्रिया की सेज,
करेगी अहिंसा की-
सम्पूर्णता को
परिभाषित
तमंचे की गोली
देगा विश्वास को
अखंडता का
प्रमाण पत्र
कालकूट का स्वर्ण पात्र.
व्यर्थ
घबराते हो
तुम तो मित्र
नहीं पहुंचा है
तुम्हारा सत्य
तुम्हारी अहिंसा
तुम्हारा विश्वास
अभी उस
पराकाष्ठा पर
जब कि
देगा तुम्हें कोई
शूली, गोली या कालकूट!

31.3.87

एल्गिन रोड, कोलकाता स्थित सुप्रसिद्ध गोलमंदिर के समक्ष १७ सितम्बर २०२० को "मारवाड़ी सम्मेलन भोजनालय" कार्यक्रम के शुभारम्भ समारोह की झलकियाँ

Rungta Mines Limited
Chaibasa
RUNGTA STEEL™
SOLID STEEL
• Superior Technology
• Greater Strength
• Extreme Flexibility
500D
TMT REBARS
STEEL DIVISION
RUNGTA CHAMBERS
S.M.H.M.V. COMPLEX, CHAIBASA -833201
WEST SINGHBHUM, JHARKHAND, INDIA
Contact :
+91-6582-255261/ 361
+91-7008-012240
tmtmkt@rungtamines.com
csp@rungtamines.com
Approved by IS 1786:2008
Lic.No.-CM/L 5800021706
Approved by IS 2830:2012
Lic.No.-CM/L 5800007712

देव-स्तुति

[गतांक से आगे]

– डॉ. जुगल किशोर सर्राफ

अग्निरूवाच

यत्तेजसाहं सुसमिद्धतेजा
हव्यं वहे स्वध्वर आज्यसिक्तम्।
तं यज्ञियं पञ्चविधं च पञ्चभिः
स्विष्टं यजुर्भिः प्रणतोऽस्मि यज्ञम्।।

हे भगवान्, मैं आपको सादर नमस्कार करता हूँ, क्योंकि आपकी ही कृपा से मैं प्रज्ज्वलित अग्नि के समान तेजस्वी हूँ और मैं यज्ञ में प्रदान किया जाने वाला घृतमिश्रित आहुतियाँ स्वीकार करता हूँ। यजुर्वेद के अनुसार पाँच प्रकार की छवियाँ आपकी ही विभिन्न शक्तियाँ हैं और आपकी पूजा पाँच प्रकार के वैदिक मन्त्रों से की जाती है। यज्ञ का अर्थ ही आप अर्थात् परम भगवान् है।

देवा ऊचुः

पुरा कल्पापाये स्वकृतमुदरीकृत्य विकृतं
त्वमेवाद्यस्तस्मिन्सलिल उरगेन्द्राधिशयने।
पुमान्शेषे सिद्धैर्हृदि विमृशिताध्यात्मपदविः
स एवाद्याक्ष्णोर्यः पथि चरसि भृत्यानवसि नः।।

हे भगवान, पहले जब प्रलय हुआ था, तो आपने भौतिक जगत की विभिन्न शक्तियों को संरक्षित कर लिया था। उस समय ऊर्ध्वलोकों के सभी वासी, जिसमें सनक जैसे मुक्त जीव भी थे, दार्शनिक चिन्तन द्वारा आपका ध्यान कर रहे थे। अतः आप आदिपुरुष हैं और प्रलयकालीन जल में शेषशय्या पर शयन करते हैं। अब आज हम आपको अपने समक्ष देख रहे हैं। हम सभी आप के दास हैं। कृपया हमें शरण दीजिये।

गन्धर्वा ऊचुः

अंशांशास्ते देव मरीच्यादय एते
ब्रहोन्द्राद्या देवगणा रूद्रपुरोगाः।
क्रीडाभाण्डं विश्वामिदं यस्य विभूमन्
तस्मै नित्यं नाथ नमस्ते करवाम।।

हे भगवान, शिव, ब्रह्मा, इन्द्र, मरीचि समेत समस्त देवतागण तथा ऋषिगण आपके शरीर के विभिन्न अंश हैं और यह सारी सृष्टि आपके लिए खिलौना मात्र है। हम सदैव आपको पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् रूप में स्वीकार करते हैं और आपको सादर नमस्कार करते हैं।

विद्याधरा ऊचुः

त्वन्माययार्थमभिपद्य कलेवरेऽस्मिन्
कृत्वा ममाहमिति दुर्मतिरूत्पथैः स्वैः।
क्षिप्तोऽप्यसद्विषयलालस आत्ममोहं
युष्मत्कथामृतनिषेवक उद्व्युदस्येत्।।

हे भगवान, यह मानव शरीर सर्वोच्च सिद्धि प्राप्त करने के लिए है, परन्तु आपकी बहिरंगा शक्ति के द्वारा वशीभूत होकर जीवात्मा भ्रमवश अपने आपको देह तथा भौतिक शक्ति मान बैठता है, अतः माया द्वारा वशीभूत होकर वह सांसारिक भोग द्वारा सुखी बनना चाहता है। इस प्रकार अज्ञानी पुरुष भ्रमित होकर गलत मार्ग पर चलते जाता है और क्षणिक माया-सुख के प्रति सर्वदा आकर्षित होता रहता है। किन्तु आपके कार्यकलाप इतने ताकतवर हैं कि यदि कोई उनके श्रवण तथा कीर्तन में अपने आपको नियुक्त करे तो मोह और माया से उसका उद्धार हो सकता है।

ब्राह्मणा ऊचुः

त्वं क्रतुस्त्वं हविस्त्वं हुताशः स्वयं
त्वं हि मन्त्रः समिद्दर्भपात्राणि च।
त्वं सदस्यर्त्विजो दम्पती देवता
अग्निहोत्रं स्वधा सोम आज्यं पशुः।।

हे भगवान्, आप साक्षात् यज्ञ हैं। आप ही घी की आहुति हैं; आप अग्नि हैं; आप वैदिक मन्त्रों के उच्चारण हैं; आप ईंधन हैं; आप ज्वाला हैं; आप कुश हैं; आप ही यज्ञ के पात्र हैं और आप ही यज्ञकर्ता तथा पुरोहित हैं। आप इन्द्र आदि देवतागण हैं और आप ही यज्ञ-पशु हैं। जो कुछ भी यज्ञ में अर्पण किया जाता है, वह आप या आपकी शक्ति है।

त्वं पुरा गां रसाया महासूकरो
दंष्ट्रया पद्मिनीं वारणेन्द्रो यथा।
स्तूयमानो नदल्लीलया योगिभी—
र्व्युज्जहर्थ त्रयीगात्र यज्ञक्रतुः।।

हे भगवान्, हे साक्षात् वैदिक ज्ञान, भूतकाल में जब आप महान् सूकर अवतार के रूप में प्रकट हुए थे तो पृथ्वी को जल के भीतर से इस तरह ऊपर उठा लिया था जिस तरह कोई हाथी सरोवर में से कमलिनी को उठा लाता है। जब आपने उस विराट सूकर रूप में दिव्य गर्जन किया, तो उस ध्वनि को यज्ञ मन्त्र के रूप में स्वीकार कर लिया गया और सनक जैसे महान् ऋषियों ने उस यज्ञ मन्त्र को ध्यान करते हुए आपकी स्तुति की।

स प्रसीद त्वमस्माकमाकाङ्क्षतां
दर्शनं ते परिभ्रष्टसत्कर्मणाम्।
कीर्त्यमाने नृभिर्नाम्नि यज्ञेश ते
यज्ञविघ्नाः क्षयं यान्ति तस्मै नमः।।

हे भगवान्, हम आपके दर्शन के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे क्योंकि हम वैदिक अनुष्ठानों के अनुसार यज्ञ नहीं कर पाए हैं। इसलिए हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हम पर प्रसन्न हों। आपके पवित्र नाम-कीर्तन मात्र से समस्त बाधाएँ दूर हो जाती हैं। हम आपकी उपस्थिति में आपको सादर नमस्कार करते हैं।

IISD Edu World
Be a Leader...

SREI Foundation

"Educate Morally & Technically" — Swami Vivekananda

Swami Vivekananda SREI Merit Scholarship upto 100% Quality Education at most affordable fees

Hospitality

Hospitality Management & Culinary Arts

Newly Introduced

BTED – HND in Hospitality Management

awarded by EDEXCEL, UK (A Pearson Global Education Undertaking)

Centre for Administrative Services / WBCS

Course Director: Dr.Bikram Sarkar (IAS retd.)

- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelim and Main)
- WBCS (Executive) and Judicial Services Examinations (Prelim and Main)

Health Care

Preparatory course for Joint Entrance of MD/MS, DNB and MRCP (Part-I) Medicine

"Family Medicine Certificate Course (First Aid)

Language School

- Functional English
- Spanish
- Russian
- Chinese
- French
- Hindi
- SANSKRIT
- Spoken English
- Italian
- German
- Persian
- Bahasa (Indonesia)
- Bengali

Business School

- AIMA recognized PGDM (2Yrs.)
- Tally ERP 9+GST
- Company Secretaryship
- Chartered Accountancy (CPT, IPCC & Final)
- Entrepreneurship Development
- Diploma in Banking and Finance

Assistance for placement

- Complementary Spoken English
- Online Application Facility
- Regular / Weekend Classes
- AC Classrooms
- P G Accommodation

Skills

- Web Technology
- Certificate course on Theology
- Soft Skills
- Vocational & Technical Training
- Montessori Teacher Training (1 Year Diploma)
- Certificate Course on Computer Applications
- School Guide
- Bachelor Guide

IISD EDU World

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379
E-Mail : info@iisdedu.in • Website : www.iisdedu.in

18, Ballygunge Circular Road, Kolkata-700019
Website : www.iisdeduworld.com
Email : iisdedu@gmail.com
Ph : 46001626 / 27

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

		आजीवन सदस्य		
श्री राजेश कुमार खेतान मेन रोड, खेतराजपुर संबलपुर, ओडिशा	**श्री गौतम शर्मा** माँ वैष्णो देवी मंदिर खेतराजपुर, संबलपुर, ओडिशा	**श्री प्रमोद कुमार केडिया** बालाजी कालनि, लेन-२, खेतराजपुर, संबलपुर, ओडिशा	**श्री अशोक केडिया** बालाजी कॉलनि, लेन-२, खेतराजपुर, संबलपुर, ओडिशा	**श्री गोपाल अग्रवाल** मोहन निवास, महानदी इंक्लेव, कमलीबाजार, संबलपुर, ओडिशा
श्री पवन कुमार बाँका नयापाड़ा, गोलबाजार, संबलपुर, ओडिशा	**श्री नवरंग अग्रवाल** मे. श्रीश्याम अल्यु भंडार खेतराजपुर, संबलपुर, ओडिशा	**श्री कमल किशोर शर्मा** मे. नरसिंह ट्रेडर्स, नजदीक २ नं. पेट्रोल पंप, खेतराजपुर संबलपुर, ओडिशा	**श्री श्रवण कुमार अग्रवाल** नजदीक धर्मशाला, खेतराजपुर, संबलपुर, ओडिशा	**श्री बिमल अग्रवाल** नजदीक बाजार कोलकाता, नयापाड़ा, संबलपुर, ओडिशा
श्री दीपक कुमार अग्रवाल मे. कृष्णा ट्रेडिंग, बराईपल्ली संबलपुर, ओडिशा	**श्री संजय अग्रवाल** मे. श्री गणेश एंटरप्राइजेज महावीरगली, खेतराजपुर संबलपुर, ओडिशा	**श्री जोगेश चंद्र चिड़िपाल** बड़ाबाजार, संबलपुर, ओडिशा	**श्रीमती संगीता लाठ** लाठ निवास, खेतराजपुर संबलपुर, ओडिशा	**श्री हेमंत कुमार अग्रवाल** हरि भवन, तिवारी गली, खेतराजपुर, संबलपुर, ओडिशा
श्रीमती रीना देवी अग्रवाल मे. मंगल ट्रेडिंग कं. तिवारी गली, खेतराजपुर संबलपुर, ओडिशा	**श्रीमती बिनीता देवी अग्रवाल** मे. मंगल ट्रेडिंग कं. तिवारी गली, खेतराजपुर संबलपुर, ओडिशा	**श्रीमती पूनम अग्रवाल** मे. मंगल ट्रेडिंग कं. तिवारी गली, खेतराजपुर संबलपुर, ओडिशा	**श्री श्याम अग्रवाल** मे. श्रीदुर्गा ट्रेडिंग कं. खेतराजपुर, संबलपुर, ओडिशा	**श्री अनिल कुमार जैन** जैन भवन, खेतराजपुर संबलपुर, ओडिशा
श्री भानु प्रताप अग्रवाल श्याम कुटीर, तिवारी गली, खेतराजपुर संबलपुर, ओडिशा	**श्री शिव करण अग्रवाल** श्याम कुटीर, तिवारी गली, खेतराजपुर, संबलपुर, ओडिशा	**श्री अजय अग्रवाल** श्याम कुटीर, तिवारी गली, खेतराजपुर, संबलपुर, ओडिशा	**श्री प्रमोद शर्मा** नजदीक अग्रसेन भवन, केआरपी रेसीडेंसी, फ्लैट न. ३०३, खेतराजपुर, सबलपुर, ओडिशा	**श्री मनोज शर्मा** नजदीक अग्रसेन भवन, केआरपी रेसीडेंसी, फ्लैट न. ३०३, खेतराजपुर, सबलपुर, ओडिशा
श्री उद्धव पोद्दार ईसी-१/८, एक्जीक्युटिव कॉलनि, बुद्धाराजा, संबलपुर, ओडिशा	**श्री विजय कुमार अग्रवाल** मे. अखिल इंजीनियरिंग इंडस्ट्रियल ईस्टेट, बराईपल्ली, संबलपुर, ओडिशा	**श्री महावीर प्रसाद अग्रवाल** खेतराजपुर, संबलपुर, ओडिशा	**श्री ललित कुमार अग्रवाल** मे. एल.के. अग्रवाल एण्ड असोसिएट्स, खेतराजपुर संबलपुर, ओडिशा	**श्री अशोक कुमार अग्रवाल** बालाजी कॉलनि, खेतराजपुर, संबलपुर, ओडिशा
श्री रमेश अग्रवाल मे. आर.के. मोबाइल नजदीक एनएसी ऑफिस, बुर्ला, संबलपुर, ओडिशा	**श्री शशांक केडिया** ए/३, न्यू एक्जीक्युटिव कॉलनि, प्रधानपाड़ा, बुद्धाराजा, संबलपुर, ओडिशा	**श्री अशोक केडिया** ए/३, न्यू एक्जीक्युटिव कॉलनि, प्रधानपाड़ा, बुद्धाराजा, संबलपुर, ओडिशा	**श्री श्यामलाल तुलस्यान** गुजराती स्कूल के सामने संसड़क, संबलपुर, ओडिशा	**श्री ज्ञानचंद्र पोद्दार** दलाईपाड़ा, संबलपुर, ओडिशा
श्री गिरधारी अग्रवाल बदमल बाला, तिवारी गली, खेतराजपुर, संबलपुर, ओडिशा	**श्रीमती ललिता अग्रवाल** डी-१०३, श्याम वाटिका, खेतराजपुर, संबलपुर, ओडिशा	**श्री बजरंग जैन** मे. माँ उमरावली ट्रेडर, बस स्टैण्ड, सिंघकला, बलांगीर, ओडिशा	**श्री छत्रपाल जैन** मे. पियुष कलेक्शन सिंघकला, बलांगीर, ओडिशा	**श्री फूलचंद जैन** मे. फूलचंद जैन ज्वेलर्स सिंघकला, बलांगीर, ओडिशा
श्री कैलाश कुमार जैन मेन रोड, सिंघकला, बलांगीर, ओडिशा	**श्री मुनीराज जैन** हाई स्कूल पाड़ा, सिंघकला, बलांगीर, ओडिशा	**श्री नरेन्द्र कुमार जैन** मेन रोड, सिंघकला, बलांगीर, ओडिशा	**श्री नरेश कुमार जैन** मे. जैन मेडिकल स्टोर सिंघकला, बलांगीर, ओडिशा	**श्री प्रसन्ना कुमार जैन** मे. आकाश विकास गार्मेंट्स, सिंघकला, बलांगीर, ओडिशा
श्री राजेश कुमार जैन गर्ल्स अप स्कूल के सामने सिंघकला, बलांगीर, ओडिशा	**श्री संजीब कुमार जैन** मे. पूनम क्लॉथ सेंटर सिंघकला, बलांगीर, ओडिशा	**श्री अमिचंद अग्रवाल** पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री अमित कुमार अग्रवाल** पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री अनिल कुमार अग्रवाल** नजदीक अग्रसेन भवन सोहेला, बरगढ़, ओडिशा
श्री आशीष अग्रवाल लक्ष्मी निवास, सुप्रिया मार्ग, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री बजरंग लाल अग्रवाल** पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री बिजय कुमार शर्मा** मेन रोड, एनएच-६, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री बिनोद कुमार अग्रवाल** मेन रोड, एनएच-६, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री बिनोद कुमार अग्रवाल** सोहेला, बरगढ़, ओडिशा
श्री चंद्र कुमार अग्रवाल मेन रोड, एनएच-६ सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री दीपक कुमार अग्रवाल** पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री धनपतराय अग्रवाल** पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री दिलीप कुमार अग्रवाल** पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री दिलीप कुमार अग्रवाल** सोहेला, बरगढ़, ओडिशा
श्री गणेश कुमार गोयल सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री गणेश राम अग्रवाल** पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री घनश्याम अग्रवाल** सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री गिरधारीलाल अग्रवाल** पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री गिरधारीलाल अग्रवाल** सोहेला, बरगढ़, ओडिशा

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

		आजीवन सदस्य		
श्री गोविंद राम अग्रवाल पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री गोविंद राम शर्मा** सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री हनुमान प्रसाद अग्रवाल** मो. ९८६१४२६७९० पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री हनुमान प्रसाद अग्रवाल** मो. ९४३७०५०४५३ पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री हीरालाल अग्रवाल** मास्टरपाड़ा, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा
श्री जगदीश प्रसाद (जग्गू) सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री जयप्रकाश अग्रवाल** पुराना गेट, एनएच-६, मेन रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री कैलाश कुमार अग्रवाल** पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री कन्हैयालाल अग्रवाल** पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री कपूरचंद अग्रवाल** सोहेला, बरगढ़, ओडिशा
श्री केशव अग्रवाल नजदीक थाना, मेन रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री खेमचंद अग्रवाल** बरमकेला रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री किशनलाल अग्रवाल** सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री किशोर कुमार अग्रवाल** सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री ललित कुमार अग्रवाल** सोहेला, बरगढ़, ओडिशा
श्री ललित कुमार अग्रवाल पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री महेन्द्र कंसल** पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री ममनराम शर्मा** पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री मनोज कुमार अग्रवाल** सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री नानक चंद अग्रवाल** मेन रोड, एनएच-६, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा
श्री नंदकिशोर अग्रवाल बरमकेला रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री नरेश कुमार शर्मा** पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री नाथुराम अग्रवाल** पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री पप्पु कुमार गोयल** सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री पवन कुमार जिंदल** मेन रोड, एनएच-६, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा
श्री प्रदीप कुमार अग्रवाल मेन रोड, एनएच-६, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री प्रह्लाद रॉय** पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री प्रमोद कुमार अग्रवाल** सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री प्रेम चंद्र शर्मा** पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री प्रेमराज अग्रवाल** नजदीक ब्लॉक ऑफिस, मेन रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा
श्री राधेश्याम अग्रवाल सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री राजकुमार अग्रवाल** पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री राजेन्द्र कुमार अग्रवाल** पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री राम भगत चहाड़िया** मेन रोड, एनएच-६ सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री रामबिलास अग्रवाल** मास्टरपाड़ा, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा
श्री रामनिवास अग्रवाल सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री रामनिवास अग्रवाल** पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री रामचंद्र जिंदल** मेन रोड, एनएच-६, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री रमेश कुमार अग्रवाल** सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री रमेश कुमार अग्रवाल** मास्टरपाड़ा, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा
श्री रोशनलाल अग्रवाल सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री संजय कुमार अग्रवाल** मेन रोड, एनएच-६, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री सत्यनारायण अग्रवाल** पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री शंकरलाल शर्मा** मे. महावीर प्रसाद शंकरलाल पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री शिव कुमार अग्रवाल** सोहेला, बरगढ़, ओडिशा
श्री श्याम कुमार गुप्ता हॉस्पिटल रोड, बरगढ़, ओडिशा	**श्री सुनील कुमार अग्रवाल** नजदीक अग्रसेन भवन, पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री सुरेश कुमार अग्रवाल** सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री सुशील कुमार अग्रवाल** मास्टरपाड़ा, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री ताराचंद्र अग्रवाल** पेट्रोल पंप के सामने, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा
श्री तिलोक चंद्र अग्रवाल बरमकेला रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**श्री उत्तम कुमार अग्रवाल** पदमपुर रोड, सोहेला, बरगढ़, ओडिशा	**डॉ. श्रीनिवास अग्रवाल** मे. मॉडर्न आई क्लिनिक, शर्मा चौक, तालचेर, अंगुल, ओडिशा	**श्री अशोक कुमार मोदी** मे. कृष्णा एजेंसीज, नव मिश्रा कॉलनि, तालचेर, अंगुल, ओडिशा	**श्री वेद प्रकाश मोदी** नव मिश्रा कॉलनि, तालचेर, अंगुल, ओडिशा
श्री विकास अग्रवाल मे. गणपति प्लाइवुड, बाईपास रोड, तालचेर, अंगुल, ओडिशा	**श्री विनोद कुमार अग्रवाल** वार्ड नं. ९, महादेव विहार, तालचेर, अंगुल, ओडिशा	**श्री देवराज जैन** मे. संगम स्टोर, तालचेर, अंगुल, ओडिशा	**श्री गोपाल प्रसाद मोदी** मे. गोपाल ट्रेडिंग कं., नव कॉलनि, तालचेर, अंगुल, ओडिशा	**श्री हरीष चंद्र अग्रवाल** नव कॉलनि, तालचेर, अंगुल, ओडिशा
श्री मदन कुमार अग्रवाल ओल्ड काउंसिल बिल्डिंग, तालचेर, अंगुल, ओडिशा	**श्री मनोज कुमार मोदी** नव मिश्रा कॉलनि, हाटोटोटा, तालचेर, अंगुल, ओडिशा	**श्री ओम प्रकाश गुप्ता** हांडीधुआ, तालचेर, अंगुल, ओडिशा	**श्री पदम अग्रवाल** मे. ऊषा एजेंसीज, हाटोटोटा रोड, तालचेर, अंगुल, ओडिशा	**श्री पवन कुमार जैन** मे. जैन ऑटो स्पेअर, बाईपास रोड, तालचेर, अंगुल, ओडिशा

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

		आजीवन सदस्य		
श्री प्रदीप अग्रवाल तालचेर, अंगुल, ओडिशा	**श्री प्रमोद कुमार अग्रवाल** रेमुअन, तालचेर, अंगुल, ओडिशा	**श्री राज किशोर अग्रवाल** तालचेर टाउन, तालचेर, अंगुल, ओडिशा	**श्री राम चंद्र अग्रवाल** मे. देवी मार्बल, हाटोटोटा, तालचेर, अंगुल, ओडिशा	**श्री रमेश कुमार बहेटी** मे. जयश्री टेक्सटाइल्स, हाटोटोटा, तालचेर, अंगुल, ओडिशा
श्री शंकर लाल अग्रवाल नव मिश्रा कॉलनि, तालचेर टाउन, तालचेर, अंगुल, ओडिशा	**श्री ब्रज मोहन अग्रवाल** तरभा, सुबर्णपुर, ओडिशा	**श्री गोपाल प्रसाद झाझड़िया** तरभा, सुबर्णपुर, ओडिशा	**श्री माँगेलाल अग्रवाल** तरभा, सुबर्णपुर, ओडिशा	**श्री रतनलाल अग्रवाल** तरभा, सुबर्णपुर, ओडिशा
श्री अमन कुमार गोयल सर्गीगुड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री आनंद कुमार अग्रवाल** मे. आकाश फैन्सी, ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री आनंद कुमार जैन** मे. जैन फुटविअर, ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री आशीष कुमार अग्रवाल** मे. किड्स वंडर, ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री अशोक कुमार अग्रवाल** ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा
श्री अशोक कुमार अग्रवाल मे. जय अम्बे वस्त्रालय, ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री बजरंग लाल अग्रवाल** मे. बालाजी ट्रेडर्स, श्रीराम नगर, सर्गीगुड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री बजरंगलाल जैन** नीलाचक्र नगर, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री बंटी अग्रवाल** स्वाधीनपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री बनवारी लाल अग्रवाल** मो. ९४३७०३८३८१ ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा
श्री बनवारीलाल अग्रवाल ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री बिजय कुमार जैन** सर्गीगुड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री बिजय कुमार जैन** मे. उपहार गैल्री, ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री बिजय कुमार जैन** सर्गीगुड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री बिकास कुमार जैन** मे. ओम फैन्सी स्टोर, ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा
श्री विष्णु प्रसाद बिर्मिवाल ओल्ड बैंक चौक, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री चम्पालाल जैन** रघुनाथपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री दीपक जैन** मेन रोड, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री देवी प्रसाद शर्मा** मे. शर्मा ब्रदर्स, ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री दीनदयाल अग्रवाल** ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा
श्री दिनेश अग्रवाल मे. माँ घंटेश्वरी ऑटोमोबाइल्स, ओल्ड बैंक चौक, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री दिनेश कुमार शर्मा** ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री गजानंद अग्रवाल** रघुनाथपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री घनश्याम दास अग्रवाल** मे. जगन्नाथ किराना स्टोर, मेन रोड, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री गोपाल अग्रवाल** खुलाह, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा
श्री गोपाल प्रसाद लाठ नजदीक स्टेट बैंक, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री गोपाल टिबड़ेवाल** नजदीक बैंक चौक, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री गुलाब सोनी** मे. भवानी ज्वेलर्स, मेन रोड, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री हनुमान प्रसाद अग्रवाल** मे. सावित्री क्लॉथ स्टोर, ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री हरीष कुमार झुनझुनवाला** रानीसती कम्प्यूटर, ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा
श्री हेमराज अग्रवाल ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री जयप्रकाश जैन** मौसी मंदिर चौक, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री जुगल किशोर गोयनका** ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री कैलाश चंद बंसल** स्वाधीनपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री कन्हैयालाल शर्मा** ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा
श्री खेमचंद अग्रवाल पो-खोलन, बलांगीर, ओडिशा	**श्री किशोर अग्रवाल** ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री लोकेश अग्रवाल** ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री महेश इन्दोरिया** ठेकेदारपाड़ा, धर्मशाला रोड, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री महेश कुमार अग्रवाल** खुलाह, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा
श्री महेश कुमार अग्रवाल रानीसती मंदिर रोड, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री ममराज जैन** मे. अजन्ता इलेक्ट्रिकल्स मेन रोड, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री मानकचंद जैन** जैनपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री माँगेराम अग्रवाल** मे. माँगे फैन्सी स्टोर, मेन रोड, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री मंगतुराम जैन** ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा
श्री मनीष कुमार गुप्ता स्वाधीनपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री मनोज कुमार अग्रवाल** खुलाह, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री मनोज कुमार जैन** ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री मंसाराम अग्रवाल** मे. पूजा वस्त्रालय, ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री मुकेश कुमार खैतान** मे. मामा भांजा, ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा
श्री नवीन कुमार जैन स्वाधीनपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री नेमी चंद शर्मा** मे. दादीजी एंटरप्राइजेज ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री निर्मल कुमार चौधरी** मे. जैन एंटरप्राइजेज जैनपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री नितेश कुमार जैन** सर्गीगुड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री पंकज अग्रवाल** ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

		आजीवन सदस्य		
श्री पंकज कुमार जैन मेन रोड, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री प्रकाश चंद अग्रवाल** नजदीक जगन्नाथ टेम्पल, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री प्रकाश कुमार गोयल** मे. खेमीसती एंटरप्राइजेज, देसिल, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री प्रीतम कुमार जैन** एनएसी बिल्डिंग के सामने स्टेशन रोड, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री रबिन कुमार अग्रवाल** पो.- खोलन, बलांगीर, ओडिशा
श्री राजेश कुमार अग्रवाल ओडिशा	**श्री राजेश कुमार अग्रवाल** मे. भगवती किराना स्टोर, ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री रमेश कुमार कानोड़िया** मे. कानोड़िया फैन्सी स्टोर, मेन रोड, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री रिंकु अग्रवाल** टेम्पल रोड, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री रोशनलाल जैन** शास्त्री चौक, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा
श्री साहिल गोयल गिरीष हाई स्कूल पाड़ा टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री संगीत कुमार जैन** गर्ल्स हाई स्कूल के सामने सिनेमा हॉल रोड, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री संजय कुमार अग्रवाल** हाटपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री संजीव कुमार जैन** स्वाधीनपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री संतोष बिर्मिवाल** मेन रोड, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा
श्री संतोष कुमार केजरीवाल मे. हिन्दुस्तान सीड्स, ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री शशि कपूर जैन** मे. भवानी ज्वेलर्स, मेन रोड, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री सत्यनारायण अग्रवाल** स्टेशन रोड, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री सत्यनारायण अग्रवाल** ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री शंकर अग्रवाल** खुलाह, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा
श्री शंकर लाल शर्मा ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री शिवरतन कानोड़िया** रघुनाथपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री सुधीर अग्रवाल** स्वाधीनपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री सुरेन्द्र गाड़ोदिया** स्वाधीनपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री सुशील कुमार कानोड़िया** मे. श्री श्याम गार्मेंट, धर्मशाला रोड, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा
श्री स्वदेश राज जैन स्टेशन रोड, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री उदयचंद अग्रवाल** ठेकेदारपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री विमल अग्रवाल** हाटपाड़ा, टिटिलागढ़, बलांगीर, ओडिशा	**श्री आलेख अग्रवाल** हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री अर्जुन अग्रवाल** हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा
श्री अशोक कुमार अग्रवाल ऊषा फिलिंग, हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री बिकास कुमार गर्ग** हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री दुलीचंद अग्रवाल** मो. ९४३७९६१९४१ हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री दुलीचंद अग्रवाल** मो. ९६५८४०५७०० हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री गोविंद राम अग्रवाल** हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा
श्री जगन्नाथ प्रसाद अग्रवाल हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री मनोज अग्रवाल** मो. ७८९४५९१२८६ हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री मनोज अग्रवाल** मो. ९४३७४२९७४७ हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री मुकेश अग्रवाल** हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री नरेश कुमार अग्रवाल** मे. अखिल टायर्स, हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा
श्री नवीन अग्रवाल मो. ९४३७९६०१४५ हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री नवीन अग्रवाल** मो. ९४३७४६६८८८ हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री पवन अग्रवाल** हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशाा	**श्री प्रदीप जैन** हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री प्रवीण अग्रवाल** हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा
श्री राज कुमार अग्रवाल मो. ९४३७२४२१८१ हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री राज कुमार अग्रवाल** मो. ९४३७७०५५७५ हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री राजेश अग्रवाल** हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री रामअवतार सिंघल** हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री रतनलाल अग्रवाल** हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा
श्री रूपेश अग्रवाल हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री संदीप अग्रवाल** हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री शंकरलाल अग्रवाल** हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री शीतल अग्रवाल** हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री श्रवण अग्रवाल** हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा
श्री सुभाष चंद अग्रवाल हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री उमेश अग्रवाल** हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री विजय अग्रवाल** हरिशंकर रोड, बलांगीर, ओडिशा	**श्री अजय कुमार अग्रवाल** मिशन रोड, सुंदरगढ़, ओडिशा	**श्री आनंद कुमार अग्रवाल** निरंजन नगर, रंगाधीप, सुंदरगढ़, ओडिशा
श्री अनिल अग्रवाल मे. अग्रवाल इलेक्ट्रोनिक्स हॉस्पिटल चौक, सुंदरगढ़, ओडिशा	**श्री अनिल अग्रवाल** मिशन रोड, सुंदरगढ़, ओडिशा	**श्री अनिल कुमार धनानिया** संकरा, सुंदरगढ़, ओडिशा	**श्री आशीष अग्रवाल** सुनारीपाड़ा रोड, सुंदरगढ़, ओडिशा	**श्री अशोक मित्तल** रानी बगीचा, सुंदरगढ़, ओडिशा

SERVICES AT A GLANCE

- **Laboratory Services - Advanced Automatic Equipments**

- **Radiology**

  - MRI / CT / Scan | - Digital X-Ray
  - Ultrasonography | - Colour Doppler Study

- **Cardiology**

  - ECG | - Echo-Cardiography
  - Echo-Colour Doppler | - Holter Monitoring
  - Treadmill Test (TMT)

- **Wide Range of Pathology**
- **Pulmonary Function Test**
- **UGI Endoscopy / Colonoscopy**
- **Physiotherapy**
- **EEC / EMG / NCV**
- **General & Cosmetic Dentistry**
- **Elder Care Service**
- **Sleep Study (PSG)**
- **EYE / ENT Care Clinic**
- **Gynae and Obstetric Care Clinic**
- **Haematolgy Clinic**
- **Personalised Care (Injection, Dressing, ECG etc.) at your doorstep**
- **Health Check-up Packages**
- **Online Reporting**
- **Report Delivery**

Home Blood Collection

(033) 4021-2525, 97481-22475

98301 96659

Consultation I Diagnostics I Dentistry I Health Checks

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2018-2020
Date of Publication - 30th September 2020
RNI Regd. No. 2866/1968

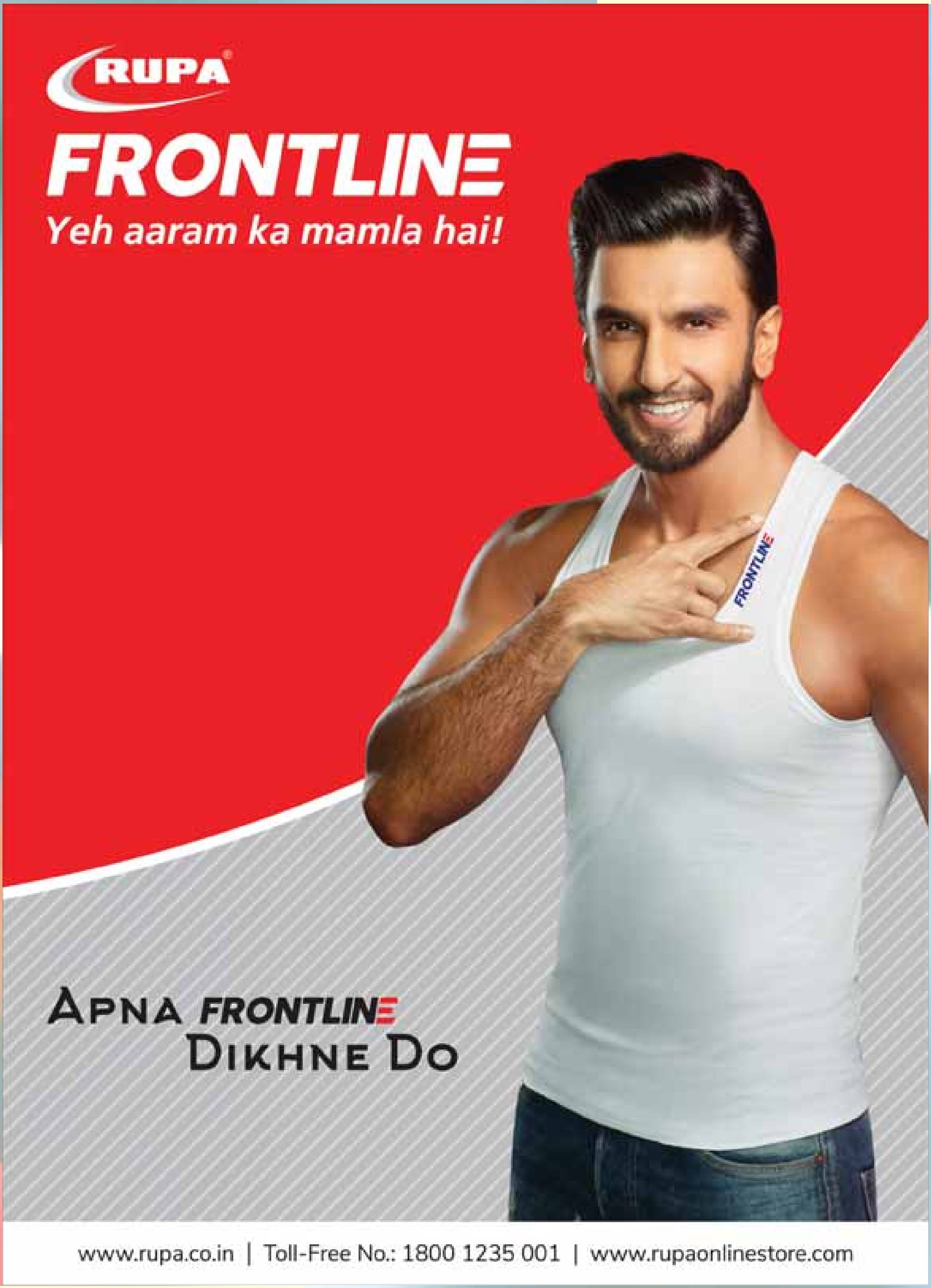

From :
All India Marwari Federation
4B, Duckback House
41, Shakespeare Sarani, Kolkata-17
Phone : (033) 4004 4089
E-mail : aimf1935@gmail.com